भावना संदेश

अक्टूबर – 2018

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति के उन्नीसवां स्थापना दिवस
(दि. 19 अगस्त 2018) की झलकियाँ

भावना की प्रबंधकारिणी के सदस्यों की अद्यतन सूची

संरक्षक मंडल

संरक्षक सदस्य

श्री विजय कृष्ण शुंगलू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (निवर्तमान)
अब अध्यक्ष, दिल्ली पब्लिक स्कूल सोसायटी
फोन : 0120-2513838/09810711820
ई. मेलः vkshunglu@yahoo.co.in

श्री अरूण कुमार वशिष्ठ
अध्यक्ष (से.नि.), उ.प्र. राज्य विद्युत परिषद
फोन : 24064325/9335025733/7007538757

संरक्षक एवं विशिष्ट सदस्य
परामर्शी, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ

1- न्यायमूर्ति कमलेश्वर नाथ
न्यायाधीश (से.नि.), इलाहाबाद उच्च न्यायालय
फोन : 0522-2789033/09415010746
ई.मेलः justicekn@gmail.com

2- न्यायमूर्ति घनश्याम दास अग्रवाल
पूर्व अध्यक्ष, नेशनल इन्डस्ट्रियल ट्रिब्युनल, मुम्बई,
न्यायाधीश (से.नि.), इलाहाबाद उच्च न्यायालय
फोन : 0522-2309327

3- न्यायमूर्ति सुधीर चन्द्र वर्मा
न्यायाधीश (से.नि.), इलाहाबाद उच्च न्यायालय तथा
पूर्व लोकायुक्त, उत्तर प्रदेश
फोन : 09415419439

4- न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी
न्यायाधीश (से.नि.), इलाहाबाद उच्च न्यायालय
अध्यक्ष, उच्च जाति आयोग, बिहार
फोनः 0522-2302591/09415152086

5- न्यायमूर्ति करण लाल शर्मा
न्यायाधीश (से.नि.), इलाहाबाद उच्च न्यायालय
फोन : 0522-2997299/2398857/09415560824
ई. मेलः sunil.sharma.lko@gmail.com

6- श्री राकेश कुमार मित्तल
प्रमुख सचिव (से.नि.), उ.प्र. शासन तथा मुख्य संयोजक,
कबीर शान्ति मिशन
फोन : 0522-2309147/2307164/09415015859
ई. मेलः rakesh_mittal_2000@yahoo.com

7- श्री अजय प्रकाश वर्मा, आई.ए.एस. (से.नि.)
पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार
फोन : 0522-2395195/09415402554

8- श्रीमती सुनन्दा प्रसाद, आई.ए.एस.(से.नि.)
पूर्व अध्यक्ष, राजस्व परिषद, उ.प्र.
फोन : 09839211040
ई.मेलः prasad_sunanda@hotmail.com

9- श्री चंद्र प्रकाश श्रीवास्तव
मुख्य आयुक्त (से.नि.),
कस्टम्स, सेन्ट्रल एक्साइज़ तथा सर्विस टैक्स
फोनः 0522-4073682/07754058564
ई.मेलः cps2806@gmail.com

10- पद्मश्री प्रो. महेन्द्र सिंह सोढा
पूर्व कुलपति, इन्दौर, लखनऊ तथा भोपाल विश्वविद्यालय,
फोन : 0522-2788033,
ई. मेलः msodha@rediffmail.com

11- श्री ज्ञानेन्द्र कुमार खरे
अध्यक्ष (से.नि.), रेलवे बोर्ड, भारत
फोन : 0532-2624020/09335157680
ई.मेलः kharegk.ald@gmail.com

12- श्री जगदीश गाँधी
सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, संस्थापक प्रबंधक,
सिटी मोन्टेसरी स्कूल्स, लखनऊ
फोन : 09415015030
ई. मेलः info@cmseducation.org

13- श्री ओम् नारायण
निदेशक (से.नि.), कोषागार, उ.प्र.
फोनः 0522-3013010/09415515647
ई.मेलः omnarayan@hotmail.com

संरक्षक एवं संस्थापक सदस्य

श्री कोमल प्रसाद वार्ष्णेय
प्रमुख अभियन्ता (से.नि.), लोक निर्माण विभाग, उ.प्र.
फोन : 0522-2321680/09415736256

संस्थागत सदस्य

मिरर फ़ाउन्डेशन्स फ़ॉर सेल्फ़ इम्प्रूवमेन्ट एन्ड नेचुरल लिविन्ग
श्री पवन ग्रोवर, संस्थापक अध्यक्ष
फोन :522-4002197/2311168/09839035475
ई. मेलः pawangrover@yahoo.com

स्वास्थ्य एवं जड़ी बूटी विकास संस्थान
आस्था सेन्टर फॉर जेरियाट्रिक, पालिएटिव केयर, हॉस्पिटल,
हॉस्पिस एण्ड सोशल वेलफेयर सोसाइटी
डॉ. अभिषेक शुक्ला, संस्थापक अध्यक्ष
फोनः 0522-3240000/09336285050
ई.मेलः enquiry@hospiceindia.org

शेष कवर 3 पर..

(सदस्यों में केवल आन्तरिक वितरण हेतु)

भावना संदेश

वर्ष : 18 अंक : 04 अक्टूबर–2018

सम्पादन समिति

इं0 अमरनाथ – प्रधान सम्पादक
श्री सुशील कुमार शर्मा – सम्पादक
प्रो0 (डॉ0) अवनीश अग्रवाल – सह–सम्पादक

प्रकाशक

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति
507, कसमण्डा रीजेन्ट अपार्टमेन्ट्स
पार्क रोड, लखनऊ–226001
दूरभाष : 0522–4016048 पं.सं.: 662/2000–01
वेबसाइट : www.bhavanaindia.org
ई–मेल : bhavanasindia@gmail.com
Facebook page : Bharatiya Varishtha Nagarik Samiti
Bhavana google group: bhavanamembers@googlegroups.com

मुद्रक

क्रियेटिव इंक, हिमांशु सदन, 5 पार्क रोड, लखनऊ।
मो0 : 7398629394 9935526017
E-mail : creativesheebu@gmail.com

अनुक्रम

1.	सम्पादकीय	1–2
2.	विज्ञापन दरें	2
3.	28.7.2018 की प्रबंधकारिणी की बैठक	3
4.	उन्नीसवां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न	4
6.	नये सदस्यों की सूची	5
7.	दानदाताओं की सूची	6–8
8.	शिक्षा सहायता पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची	9–13
9.	भावना का सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ	14
8.	अन्य	17–39
9.	प्रबंधकारिणी की सूची	40–44

संपादकीय

अमृतवानी

कुछ विद्वानों द्वारा कही गयी अच्छी बातें जनहित में नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं।

1. ऐसा न बोलें कि कलह हो जाय।
2. ऐसा न खाएं की रोग हो जाय। खाना सदैव निर्धारित समय पर ही खाएं चूँकि भोजन में समय का बड़ा महत्व है।
3. दान देना एक उत्तम कार्य है परंतु दान देकर उसका बखान करना अनुचित है।
4. जिसको धूल समझकर ठुकराओगे वही आंखों की किरकिरी बन जायेगा। अतः किसी को हीन मत समझो।
5. छोटा व्यक्ति भी बहुत महत्वपूर्ण होता है कहा जाता है कि जहां काम आए सुईं क्या करे तलवार, चूंकि सुई जोड़ती है जबकि तलवार केवल काट ही सकती है। अतः व्यवहार कुशलता ही सुखदाई होगी।
6. अपने युवा बेटे को मित्रवत समझे उसे बचपन वाला बाप का रोबीला स्वभाव संभवतः रास नही आएगा। इसमें धोखा हो सकता है।
7. दीप से दीप जलाना सज्जन है परंतु फूंक मार कर दीप भुजा देना निर्ममता का प्रतीक है।
8. सास को बहु को अपनी बेटी मानना चाहिए तथा बहु को भी अपनी सास को माँ ही मानना चाहिए। दोनों जीवन काल मे एक दूसरे की पूरक हैं।
9. सुख बहुत अस्थाई होता है। दुःख दर्पण है दिखलाता है और सिखाता भी है। अतः सहनशीलता अपनाना ही उचित है।
10. किसी ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति की इच्छा न करे जो पूर्ण न हो सकता हो। इससे निराशा उत्पन्न होगी।
11. बड़े भाई को अपने छोटे भाई को मित्रवत समझना चाहिए और छोटे भाई को अपने बड़े भाई को पिता तुल्य समझना चाहिए।
12. सन्यासी कोई नहीं होता, केवल न्यास बदलता है। पहले धन के पीछे दौड़ता है फिर धर्म के पीछे।
13. कंजूस होना अच्छा नहीं है परंतु धन लुटा देना भी अच्छा नही है। संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

14. शिक्षक, डॉक्टर तथा वकील का परामर्श स्वीकार करना कल्याणकारी होता है।

15. दूसरों की गलतियाँ निकालने वाला व्यक्ति स्वयं की पहचान खो देता है।

16. क्रोध व्यक्ति का सबसे बड़ा शत्रु है, क्रोधित व्यक्ति अपना विवेक खो देता है तथा बाद में पछताता है।

17. सच लगने वाला झूठ बोलना भी एक कला है परंतु सच उजागर हो जाने पर ऐसा व्यक्ति सदा के लिए अपना अस्तित्व खो देता है।

18. किसी को अपना भेद बताकर गोपनीय रखने के लिए कहना मूर्खता है।

19. काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अंहकार पर व्यक्ति जितना नियंत्रण पा लेता है उतना ही जीवन सुखमय हो जाता है।

20. किसी गरीब की आह न लें, कहते हैं उसमें लोहे को पिघलाने की शक्ति होती है।

उपर्युक्त में से क्रमांक 13 के संदर्भ में एक हास्य/व्यंग्य की घटना याद आ गई जो मनोरंजन हेतु नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

बम्बई में एक दिन एक भिखारी कह रहा था ओह भाई अल्लाह के नाम पे एक रुपया दे दे, ईश्वर के नाम पे एक रुपया दे दे। इतने में एक व्यक्ति जो उधर से गुजर रहा था उसको ऐसा लगा कि भिखारी कपड़े तो साफ सुथरे पहने हुए है, बेचारे की कोई मजबूरी होगी जो भीख मांग रहा है। उस व्यक्ति ने एक 10 रुपये का नोट देकर भिखारी से कहा, लो खाना खा लेना लेकिन तुम तो अच्छे घराने के लगते हो फिर यह नीच काम क्यूं कर रहे हो?

इस पर भिखारी बोला : सरकार, मैंने एक रुपया मांगा था आपने 10 रुपये का नोट दे दिया, बस यही खराब आदत मेरी भी थी।

सुशील कुमार शर्मा, संपादक
मोबाइल : 8765351190

भावना का संकल्प गीत

भावना सहयोग, सेवा, स्वावलम्बन से चले,
भावना की राह में संकल्प का दीपक जले।

भावना में डूब के इतने सहिष्णु हम हुए,
आस्था, विश्वास के साँचे में हम फिर–फिर ढले।

भावना ये है बुजुर्गों को किसी भी हाल में,
इस बदलते दौर की तल्ख़ी न रत्ती भर खले।

भावना का एक ही सन्देश है सबके लिए,
शेष जीवन भर कोई अब जिन्दगी को न छले।

विश्व में इक मंच देने को वरिष्ठों के लिए,
भावना की 'शान्त' पलकों पे कई सपने पले।

– इं. देवकी नन्दन 'शान्त'

भावना सूत्र वाक्य

सन्देश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया।
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।।

– श्री मैथिली शरण गुप्त

भावना संदेश – विज्ञापन दरें

रंगीन (चार रंगों में) पूर्ण पृष्ठ –	रु. 5000/-
रंगीन (चार रंगों में) आधा पृष्ठ –	रु. 3000/-
रंगीन (दो रंग में) पूर्ण पृष्ठ –	रु. 3000/-
रंगीन (दो रंगों में) आधा पृष्ठ–	रु. 2000/-
श्वेत श्याम (पूर्ण पृष्ठ) –	रु. 2000/-
श्वेत श्याम (आधा पृष्ठ) –	रु. 1200/-
श्वेत श्याम (चौथाई पृष्ठ) –	रु. 600/-
लघु विज्ञापन (1/8 पृष्ठ तक) –	रु. 300/-

विज्ञापन की उक्त दरें प्रति अंक है। एक ही विज्ञापन भावना संदेश के चार अंकों में निरन्तर प्रकाशित करवाने पर केवल तीन अंकों का विज्ञापन शुल्क स्वीकार होगा। विज्ञापन शुल्क का अग्रिम भुगतान करना होगा।

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति की प्रबन्धकारिणी की रोटरी कम्यूनिटी सेन्टर, निराला नगर, लखनऊ में 28 जुलाई, 2018 को हुई बैठक का कार्यवृत्त

सौजन्य से : माननीय श्री राम लाल गुप्ता, श्री सतपाल सिंह, श्री राम बाबू गंगवार, श्री युगल किशोर गुप्ता तथा श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा।

उपस्थिति : प्रबंधकारिणी के संरक्षक, प्रबंधकारिणी के सदस्य तथा स्थाई आमंत्री : कुल 37 सदस्य।

अन्य विशिष्ट सदस्य तथा विशेष आमंत्रीः कुल 33 सदस्य। अनुपस्थित पदाधिकारीः कुल 29 सदस्य

कार्यवाही विवरण - माननीय अध्यक्ष महोदय के सभापतित्व में हुई इस बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए:-

1. प्रबन्धकारिणी की 26 मई, 2018 को हुई बैठक का कार्यवाही विवरण विचारोपरान्त अनुमोदित कर दिया गया।

2. सभा में उपस्थित भावना के नये बने/बनने वाले सदस्यों श्री अरुण कुमार वशिष्ठ, श्रीमती शोभा वशिष्ठ, श्री पंकज जेटली, श्रीमती मधु जेटली एवं श्री प्रणव कुमार गोस्वामी (अध्यक्ष, हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स एक्स ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसिएशन) का परिचय कराया गया। सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से नये सदस्यों का स्वागत किया।

3. अध्यक्ष महोदय के प्रस्ताव पर विचारोपरांत सभा ने सर्वसम्मति से माननीय **श्री अरुण कुमार वशिष्ठ** को उनकी सहमति से उनके विशिष्ट सदस्य बनने के दिनांक से **भावना का संरक्षक मनोनीत** कर दिया।

4. महासचिव(प्रशासन) ने सभा को अवगत कराया कि सभी स्कूलों को शिक्षा सत्र 2018-19 में शिक्षा सहायता योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता देने के लिये पात्र छात्र/छात्राओं से आवेदन प्राप्त करने के लिये आवेदन प्रपत्र दे दिये गयेहैं। आवेदन प्राप्त करने की तिथि 25 जुलाई, 2018 से बढ़ाकर 31 जुलाई, 2018 कर दी गयी है, इसके बाद किसी का आवेदन स्वीकार नहीं किया जायेगा। इस शिक्षा सत्र में कम से कम 140 छात्र/छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने का संकल्प है।

5. भावना-संदेश के जुलाई अंक में प्रकाशित दान दाताओं के बाद जिन सदस्यों/गैर-सदस्यों ने दान दिया है,उनके नाम व दी गयी दान राशि का विवरण महासचिव(प्रशासन) ने सभा के समक्ष आस्तुत किया। सभा ने करतल ध्वनि से सभी दान दाताओं को धन्यवाद दिया।

6. माननीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष जी ने सभा को अवगत कराया कि गत शिक्षा-सत्र में भावना से आर्थिक सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों/छात्राओं में से अपनी परीक्षा में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाले कक्षा 12 के छात्र/छात्रा तथा कक्षा 10 के छात्र/छात्रा को क्रमशः 15,000 एवं 10,000 रुपये का स्वर्गीय रमेश चन्द्र तिवारी स्मृति पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा। यह दोनों पुरस्कार भावना के दिवंगत विशिष्ट सदस्य स्व. रमेश चन्द्र तिवारी जी की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती वीणा तिवारी जी ने हर वर्ष के लिए संकल्पित एवं तदनुसार आायोजित किए हैं। स्व. रमेश चन्द्र तिवारी के स्थान पर श्रीमती वीणा तिवारी अब भावना की सम्मानित विशिष्ट सदस्य हैं।

7. माननीय उपमहासचिव श्री रमा कान्त पाण्डेय जी ने सभा में प्रस्ताव रखा कि महंगाई बढ़ जाने के कारण जो आर्थिक सहायता भावना द्वारा छात्र/छात्राओं को दी जाती है उसमें बढ़ोतरी कर दी जाये। सभा ने उनके प्रस्ताव की सदाशयता की प्रशंसा की किन्तु साथ ही साथ सभी पहलुओं पर गहन विचार विमर्श के उपरान्त निर्णय लिया कि फिलहाल दी जा रही आर्थिक सहायता पर्याप्त है और अभी इस में कोई बढ़ोतरी करने की आवश्यकता नहीं है।

8. भावना के डे-केयर सेन्टर व फिजियोथेरेपी सेन्टररेज़िग होप्स, सी-10, विज्ञानपुरी, महानगर, लखनऊ के परिसर में चल रहे हैं लेकिन अभी सदस्यगण कम ही आ रहे हैं। अध्यक्ष महोदय ने यह व्यवस्था दी कि आगे से सभी प्रकोष्ठों की बैठकें डे-केयर सेन्टर पर ही आयोजित हुआ करेंगी। डे-केयर सेन्टर के सचिव श्री राज देव स्वर्णकार सूचना प्राप्त होने पर प्रकोष्ठों की बैठकों की समुचित व्यवस्था करवा देंगे।

9. भावना का उन्नीसवाँ स्थापना दिवस समारोह रविवार 19 अगस्त, 2018 को राय उमानाथ बली प्रेक्षाग्रह, कैसरबाग,

शेष पृष्ठ 17 पर...

भावना का उन्नीसवाँ स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) का उन्नीसवां स्थापना दिवस रविवार, 19 अगस्त, 2018 को उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समिति द्वारा प्रायोजित एवं वित्त पोषित शिक्षा सहायता योजना के अन्तर्गत 28 विद्यालयों के 141 गरीब एवं अति गरीब किन्तु मेधावी छात्रों/छात्राओं को सहयोग राशि की पहली किश्त वितरित की गई। इनमें कक्षा 8 तक के 92, कक्षा 9 व 10 के 24 तथा कक्षा 11 व 12 के 25 बच्चे सम्मिलित हैं। लाभार्थी बच्चों में 10 दृष्टिबाधित बच्चे भी हैं। कक्षा 8 तक के प्रत्येक छात्र/छात्रा के लिए 600 रुपए की, कक्षा 9 एवं 10 के प्रत्येक छात्र/छात्रा के लिए 900 रुपए की तथा कक्षा 11 व 12 के प्रत्येक छात्र/छात्रा के लिए 1000 रुपए की पहली किश्त के चेक लाभार्थी छात्रों/छात्राओं की एवं उनके अभिभावकों की उपस्थिति में विद्यालयों के प्रधानाचार्यों अथवा उनके प्रतिनिधियों को प्रदान किए गए। दूसरी तथा अन्तिम किश्त भी इतने ही रुपयों की होगी जो जनवरी, 2018 में उन्हीं बच्चों को दी जाएगी जिनके छमाही परीक्षा के नतीजे उत्तम पाए जायेंगे।

पांच अत्यंत मेधावी छात्राओं, कु. ईशा सिंह, कु. शिखा वर्मा, कु. कोमल प्रजापति, कु. प्रिया सिंह तथा कु. आयुषी पाण्डेय को स्नातक कक्षाओं की शिक्षा के लिए छः छः हजार रुपए के सहयोग की चेकें भी प्रदान की गईं।

श्री आश्वल दीक्षित तथा कु. कविता रावत को उनके क्रमशः कक्षा 12 तथा कक्षा 10 के सर्वश्रेष्ठ परीक्षाफलों के लिए क्रमशः 15,000 तथा 10,000 रुपए के **"स्व. रमेश चन्द्र तिवारी स्मृति पुरस्कार"** से सम्मानित किया गया एवं उन्हें प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए गए।

भावना के महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ की सचिव, श्रीमती अर्चना गोयल ने अपनी ओर से कक्षा 8 तक के सभी बच्चों को तौलिए भेंट किए। श्रीमती मंजुला सक्सेना, श्री जितेन्द्र नाथ सरीन, श्री जगत बिहारी अग्रवाल तथा डॉ. नरेन्द्र देव ने मिलकर कक्षा 11 के बच्चों को एक एक कलाई घड़ी तथा कक्षा 12 के बच्चों को एक एक कैलकुलेटर भेंट में दिए। कक्षा 9 तथा 11 के दृष्टिबाधित बच्चों को एक एक वाटर बॉटल भी दी गई। श्री जगत बिहारी अग्रवाल ने स्नातक कक्षाओं के तृतीय वर्ष की छात्राओं को एक एक मिल्टन की केतली दी, द्वितीय वर्ष की छात्राओं को एक एक कैलकुलेटर दिया तथा प्रथम वर्ष की छात्राओं को एक एक डॉकूमेंट-फोल्डर दिया। सभी बच्चों को डॉ. नरेन्द्र देव द्वारा रचित, भावना द्वारा प्रकाशित, **"बिना दवाओं के कैसे स्वस्थ रहें तथा दुर्व्यसनों के घात रोगों से मृत्यु/मुक्ति कैसे"** नामक लघु-पुस्तिका भी भेंट की गई। शुरू में श्रीमती अर्चना गोयल ने सभी बच्चों को नाश्ता कराया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन तथा दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी बाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण तथा अन्य सभी के द्वारा पुष्पांजलि समर्पित करके श्रद्धांजलि अर्पित करके हुआ। अध्यक्ष महोदय द्वारा उनके जीवन के उल्लेखनीय पहलुओं का उल्लेख किया गया। तत्पश्चात भावना के संकल्प-गीत का सामूहिक गायन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री कमलेश्वर नाथ, न्यायमूर्ति श्री करण लाल शर्मा तथा न्यायमूर्ति श्री सुधीर चन्द्र वर्मा थे। हेल्पेज इंडिया के निदेशक श्री अशोक कुमार सिंह, बिट्स पिलानी के पूर्व कुलपति प्रो. लक्ष्मी कान्त महेश्वरी, लखनऊ व्यापार मंडल के महामंत्री श्री अमर नाथ मिश्र तथा श्री हरभज राम कृपादेवी चैरिटेबिल अस्पताल के उपाध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कई अन्य प्रतिष्ठित समाजसेवी संस्थाओं के प्रमुख भी समारोह में अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

भावना के अध्यक्ष, श्री विनोद कुमार शुक्ल ने अभ्यागतों का स्वागत किया तथा संक्षेप में समिति गतिविधियों की जानकारी दी एवं उन दान-दाताओं को धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से ही भावना के लिए गरीब किन्तु मेधावी बच्चों को आर्थिक सहयोग देना सम्भव हो पा रहा है। उन्होंने सहर्ष घो षित किया कि शिक्षा-सत्र 2019-20 में भी भावना द्वारा कक्षा 12 तक के कम से कम 100 बच्चों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाएगा। वर्तमान सत्र में कक्षा 8 व 9 में आर्थिक सहयोग प्राप्त कर रहे जो बच्चे कम से कम 60 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो कर क्रमशः कक्षा 9 व 10 में पहुँचेंगे उन्हें सत्र 2019-20 में इन कक्षाओं में अध्ययन हेतु प्रति छात्र/छात्रा 1800 रुपए का सहयोग प्रदान किया जाएगा। वर्तमान सत्र में कक्षा 10 तथा 11 में आर्थिक सहयोग प्राप्त कर रहे जो बच्चे कम से कम 60 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो कर क्रमशः कक्षा 11 एवं 12 में पहुँचेंगे उन्हें सत्र 2019-20 में इन कक्षाओं में अध्ययन हेतु प्रति छात्र/छात्रा 2000 रुपए का सहयोग प्रदान किया जाएगा।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री सुशील शं कर सक्सेना ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी को स्नेह-भोज हेतु आमंत्रित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री देवकी नन्दन 'शान्त' ने किया।

विनोद कुमार शुक्ल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भावना संदेश जुलाई, 2018 के प्रकाशन के बाद बने नये सदस्यों की सूची

सदस्यता क्र.- एच-16/910/संस्थागत
हिन्दुस्तान ऐरोनॉटिक्स एक्स-ऑफिसर्स वेलफेयर एसोसिएशन
प्रदीप सरन, महासचिव
सी-292, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016
फोन : 09335229471/08707444494/08604608416
ई. मेलः haeowa2011@gmail.com
DOB:15/01/1948 MD:15/10/1972

सदस्यता क्र.- एम-50/912
श्रीमती मधु जेटली, गृहणी
521/38, रॉयल अपार्टमेंट्स, बड़ा चांदगंज, महानगर, लखनऊ-226006 फोनः 09455446877
DOB:05/02/1962 MD:14/02/1990

सदस्यता क्र.- एस-197/914
श्रीमती संगीता कुमार, शिक्षक
दयानन्द कन्या इन्टर कॉलेज, महानगर, लखनऊ
सी-49, ई पार्क, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
फोनः 09839072784
DOB:02/01/1960 MD:29/05/1981

सदस्यता क्र.- एल-10/916 (विशिष्ट सदस्य)
लक्ष्मी कान्त महेश्वरी
पूर्व कुलपति, बी.आई.टी.एस., पिलानी
335/एस-12, चंद्रा धाम, मोतीनगर, तिकोना पार्क, लखनऊ-226004
फोन : 09695257152
ई.मेलः lmaheshwari@gmail.com
DOB:05/07/1945 MD:30/06/1963

सदस्यता क्र.- पी-53/911
पंकज जेटली
सहायक लेखाधिकारी, भारतीय डाक विभाग
521/38, रॉयल अपार्टमेंट्स, बड़ा चांदगंज, महानगर, लखनऊ-226006 फोनः 09455446877
DOB:29/11/1958 MD:14/02/1990

सदस्यता क्र.- ए-89/913
डॉ. अशोक कुमार
मुख्य चिकित्साधिकारी (से.नि.),
बाल चिकित्सालय, स्टेशन रोड, लखनऊ
सी-49, ई पार्क, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
फोनः 09839072784
DOB:21/04/1952 MD:29/05/1981

सदस्यता क्र.- आर-115/915 (विशिष्ट सदस्य)
रमेश कुमार अग्रवाल, व्यापारी
नारायण ट्रेडर्स, 79, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ-226018
फोन : 07355782086/09335907756
ई.मेलः shobharamesh44@gmail.com
DOB:22/02/1944 MD:09/10/1965

हमारे नये संरक्षक :

श्री अरूण कुमार वशिष्ठ

अमर उजाला,
लखनऊ
20-08-2018

अटल को समर्पित मेधावी छात्रों का सम्मान समारोह

लखनऊ। भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) के 19वें स्थापना दिवस समारोह को दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी समर्पित करते हुए शिक्षा सहायता योजना के तहत मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। रविवार को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आयोजित स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ दीप जला कर पूर्व प्रधानमंत्री को पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति कमलेश्वर नाथ, न्यायमूर्ति करण लाल शर्मा व न्यायमूर्ति सुधीर चंद्र वर्मा की उपस्थिति में 28 विद्यालयों के 141 गरीब व अति गरीब मेधावी बच्चों को सहयोग राशि की पहली किश्त वितरित की गई। इसके अलावा भावना के महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ की सचिव अर्चना गोयल ने कक्षा आठ के बच्चों को तौलिए भेंट की। वहीं मंजुला सक्सेना व जितेंद्र नाथ सरीन, जगत बिहारी व डॉ. नरेंद्र देव ने कक्षा 9 से 11वीं तक के बच्चों को घड़ी व 12वीं के बच्चों को कैलकुलेटर भेंट किया। इस दौरान स्नातक छात्र व छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। कक्षा दसवीं व 12वीं की दो छात्राओं को स्व. रमेश चंद तिवारी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसमें कक्षा 10 की छात्रा कविता रावत को सर्वश्रेष्ठ परीक्षाफल के लिए 10 हजार रुपये भेंट किए गए, वहीं 12वीं की छात्रा आश्ना दीक्षित को 15 हजार रुपये की राशि भेंट की गई।

दैनिक जागरण,
लखनऊ
20-08-2018

जरूरतमंद मेधावियों को मिला छात्रवृत्ति का तोहफा

जागरण संवाददाता, लखनऊ : भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) का 19वां स्थापना दिवस समारोह राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में मनाया गया। समिति ने शिक्षा सहायता योजना के तहत 28 विद्यालयों के 141 जरूरतमंद मेधावियों को छात्रवृत्ति का तोहफा दिया। इसमें कक्षा आठ तक के 92 मेधावी, कक्षा नौ व दस के 24 और कक्षा 11 व कक्षा 12 के 25 मेधावी शामिल हैं। कार्यक्रम में आश्ना दीक्षित व कविता रावत को क्रमशः कक्षा 12 व कक्षा 10 में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए 15 हजार व 10 हजार रुपये का स्व. रमेश चंद्र तिवारी स्मृति पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई को श्रद्धांजलि भी दी गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जस्टिस कमलेश्वर नाथ, न्यायमूर्ति करण लाल शर्मा व न्यायमूर्ति सुधीर चंद्र वर्मा शामिल रहे। कार्यक्रम में भावना की महिला सशक्तीकरण प्रकोष्ठ की सचिव अर्चना गोयल के अलावा मंजुला सक्सेना, जितेन्द्र नाथ सरीन, जगत बिहारी अग्रवाल व डॉ. नरेंद्र देव आदि मौजूद रहे।

समाचार पत्रों की नजर में

भावना का उन्नीसवाँ स्थापना दिवस समारोह 19 अगस्त, 2018

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति

आर्थिक सहयोग दाताओं की सूची (11 जून, 2018 से 10 सितम्बर, 2018 तक)

क्र0 सं0	दाता का नाम	सदस्यता संख्या	प्राप्त सहयोग रुपयों में					
			शिक्षा सहायता	निर्धन जन सेवा	भावना रसोई एवं प्रसादम सेवा हेतु	साक्षरता अभियान सहायता	अन्य कार्यक्रम	योग
1	श्रीमती रेखा मित्तल	**R-27/229**	5400.00					5400.00
2	श्रीमती आर्दश मेहरोत्रा	**गैर सदस्य**	2400.00					2400.00
3	श्री प्रेम प्रकाश अरोरा	**P-3/26**	4800.00					4800.00
4	श्री योगेन्द्र प्रकाश शर्मा	**Y-9/848**	2500.00					2500.00
5	श्रीमती नील प्रभा	**गैर सदस्य**	2100.00					2100.00
6	श्री भानू प्रकाश सिंह	**B-26/639**	5000.00			5000.00		10000.00
7	श्री कृष्ण स्वरूप शर्मा	**गैर सदस्य**			5100.00			5100.00
8	श्रीमती बीना तिवारी	**R-5/44/Vishist**		5000.00				5000.00
9	श्रीमती बीना तिवारी	**R-5/44/Vishist**	25000.00					25000.00
10	श्री सत्य प्रकाश	**गैर सदस्य**			1500.00			1500.00
11	श्रीमती नीलम चुघ	**N-26/429**	1200.00					1200.00
12	न्यायमूर्ति सुधीर चन्द्र वर्मा	**S-43/216/Vishist**	20000.00					20000.00
13	श्री बनवारी लाल गुप्ता	**B-27/645/Vishist**	1800.00			1200.00		3000.00
14	श्री रमेश प्रसाद जायसवाल	**R-79/633/Vishist**	3000.00			3000.00		6000.00
15	श्रीमती सरोज देव	**S-42/215/Vishist**	1200.00					1200.00
16	श्रीमती सीमा तिवारी	**S-195/907**	1200.00					1200.00
17	श्री मनोज कुमार गोयल	**M-3/111/Vishist**	1200.00					1200.00
18	श्रीमती अर्चना गोयल	**A-12/134 /Vishist**	1200.00					1200.00
19	श्री पियुष गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
20	श्रीमती अंशु गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
21	श्री पुनीत गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
22	श्रीमत मोना गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
23	श्री प्रीतम सिंह	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
24	श्रीमती जोगिन्दर कौर	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
25	श्री खजान चन्द्रा	**K-34/574**	5100.00					5100.00
26	श्री सुभाष गोयल	**गैर सदस्य**	2400.00					2400.00
27	श्रीमती मीरा गोयल	**गैर सदस्य**	2400.00					2400.00
28	श्री शिव नारायण अग्रवाल	**S-117/544/Vishist**	1200.00					1200.00
29	श्रीमती शशि अग्रवाल	**S-118/545/Vishist**	1200.00					1200.00
30	श्री जे.एल. भार्गव	**J-11/225**	1200.00					1200.00

31	श्रीमती रेखा भार्गव	**R-26/226**	1200.00					1200.00
32	श्री आर.एन.भार्गव	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
33	श्री सत्य नारायण गोयल	**S-133/601/Vishist**	1200.00					1200.00
34	श्रीमती राम दुलारी गोयल	**R-77/602**	1200.00					1200.00
35	श्री राकेश गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
36	श्रीमती रीना गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
37	श्री सचिन गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
38	श्रीमती रूचि गोयल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
39	श्री संतोष अग्रवाल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
40	श्रीमती अंशु अग्रवाल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
41	श्री सुमेर अग्रवाल	**S-104/504**	12000.00					12000.00
42	श्री नरेश अग्रवाल	**गैर सदस्य**	4000.00					4000.00
43	श्रीमती मंजू रोहतगी	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
44	श्री अजय आनन्द	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
45	श्रीमती कंचन आनन्द	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
46	श्रीमती मधु लता	**गैर सदस्य**			2000.00			2000.00
47	श्री सत्य प्रकाश	**गैर सदस्य**			500.00			500.00
48	श्री प्रभात किरन चौरसिया	**P-36//609/Vishist**	1200.00					1200.00
49	श्री श्याम सरण अगवाल	**S-87/436**	3600.00					3600.00
50	श्री अशोक कुमार अरोरा	**A-54/584/Vishist**	3600.00					3600.00
51	श्री सुभाष चन्द्र चावला	**S-13/88/Vishist**	2500.00					2500.00
52	श्री तुगं नाथ कन्नौजिया	**T-3/106/Vishist**	2400.00					2400.00
53	श्रीमती आशा गोयल	**A-10/119/Vishist**	2400.00					2400.00
54	श्री देवेन्द्र स्वरूप शुक्ला	**D-24/563/Vishist**	2400.00			1600.00		4000.00
55	श्री जगत बिहारी अग्रवाल	**J-10/204/Vishist**	2400.00					2400.00
56	श्री जितेन्द्र नाथ सरीन	**J-6/144/Vishist**	6000.00	2500.00		1500.00		10000.00
57	डॉ. किरन मराली	**K-57/840/Vishist**	2000.00					2000.00
58	श्री ललित कुमार	**L-8/689**	1200.00					1200.00
59	डॉ. किरन मराली	**K-57/840/Vishist**	1000.00					1000.00
60	श्री सुशील शंकर सक्सेना	**S-1/2/Vishist**	5000.00					5000.00
61	श्री शिव नारायण अग्रवाल	**S-117/544/Vishist**	2400.00					2400.00
62	श्री मुरारी लाल अग्रवाल	**M-34/643/Vishist**	3600.00					3600.00
63	श्री पाल प्रवीण	**P-31/525**	2000.00					2000.00
64	श्री राम लाल गुप्ता	**R-16/150/Vishist**	1200.00					1200.00
65	श्री ब्रिजेन्द्र कुमार अग्रवाल	**गैर सदस्य**	2000.00					2000.00
66	श्री दीपक गोयल	**गैर सदस्य**	2000.00					2000.00
67	श्री पाल प्रवीण	**P-31/525**				2000.00		2000.00
68	श्री सुरेश चन्द्र ब्रह्मचारी	**S-103/498**	1200.00					1200.00
69	श्री चेतन गोयल	**गैर सदस्य**	2000.00					2000.00
70	श्री पाल प्रवीण	**P-31/525**				1000.00		1000.00

71	श्री पंकज कुमार अग्रवाल	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
72	श्री सत्य प्रकाश	**गैर सदस्य**			500.00			500.00
73	श्रीमती स्नेह लता	**S-55/276/Vishist**	1800.00					1800.00
74	श्रीमती स्नेह लता	**S-55/276/Vishist**					5000.00	5000.00
75	कु0 आंचल भारद्वाज	**गैर सदस्य**	24000.00					24000.00
76	श्री सुभाष चन्द्र विद्यार्थी	**S-80/412/Vishist**	6000.00					6000.00
77	श्री अशोक कुमार अरोरा	**A-54/584/Vishist**				2500.00		2500.00
78	श्री इन्द्र कुमार भारद्वाज	**I-10/631/Vishist**	2400.00					2400.00
79	श्री रमा कान्त पाण्डेय	**R-80/635/Vishist**	3000.00					3000.00
80	श्री मुख्तार अली	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
81	श्री सैयद सब्बीर हसन रिजवी	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
82	श्री एन. सी. रस्तोगी	**गैर सदस्य**	1500.00					1500.00
83	श्री मोहन चन्द्र पाण्डेय	**गैर सदस्य**	1500.00					1500.00
84	श्री राज किशोर श्रीवास्तव	**गैर सदस्य**	1000.00					1000.00
85	श्री शिव नाथ सिंह	**गैर सदस्य**	1000.00					1000.00
86	श्री डी.के. भंडारी	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
87	श्री मगन सिंह ठाकुर	**गैर सदस्य**	1000.00					1000.00
88	श्री सुशील कुमार	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
89	श्री शैलेन्द्र मोहन दयाल	**S-89/446**				2000.00		2000.00
90	श्री अरूण कुमार वशिष्ठ	**A-88/908/Vishist**					11000.00	11000.00
91	श्री श्रीशरण मिश्रा	**S-98/474/Vishist**	3600.00					3600.00
92	श्रीमती उमा शशि मिश्रा	**U-10/475/Vishist**	3600.00					3600.00
93	श्री आनन्देश्वर शंकर प्रसाद	**A-84/804/Vishist**	2400.00					2400.00
94	श्री रास बिहारी लाल	**R-70/566**	1200.00					1200.00
95	श्री शिव शक्ति सरन	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
96	श्री दीपक शाह	**गैर सदस्य**	1200.00					1200.00
97	विद्युत पेंशनर परिषद,उ.प्र.	**V-37/462**	12000.00					12000.00
98	विद्युत पेंशनर परिषद,उ.प्र.	**V-37/462**				5000.00		5000.00
99	न्यायमूर्ति करन लाल शर्मा	**K-24/449/Vishist**	5000.00					5000.00
100	श्री दिलीप कुमार विरानी	**D-20/438**				221.00		221.00
101	श्री पी.एन.मिश्रा	**गैर सदस्य**	1000.00					1000.00
102	श्री आदित्य प्रकाश सिंह	**A-40/444**	2000.00					2000.00
103	श्री सत्य प्रकाश	**गैर सदस्य**			1500.00			1500.00
104	श्री रमेश कुमार अग्रवाल		10000.00					10000.00
105	श्री प्रमोद कुमार वर्मा	**गैर सदस्य**				750.00		750.00
योग			**274800.00**	**7500.00**	**11100.00**	**25771.00**	**16000.00**	**335171.00**

योग : तीन लाख पैंतीस हजार एक सौ इकहत्तर केवल

भावना-शिक्षा सहायता योजना

शिक्षा सत्र 2018–19 में शिक्षा सहायता पाने वाले छात्र/छात्राओं की चयनित सूची

1–भगवान बक्श सिंह इ0 कालेज,फैजुल्लागंज,लखनऊ

1. छात्रा का नाम	सलोनी कश्यप	पुत्री श्री राम लखन कश्यप	कक्षा–VII
2. छात्रा का नाम	आकंक्षा राठौर	पुत्री श्री राम चरित राठौर	कक्षा–VII
3. छात्रा का नाम	दिव्या प्रताप सिंह	पुत्री श्री अनिल कुमार सिंह	कक्षा– I

2–भारतीय आदर्श विद्यालय, इन्दिरा नगर ,लखनऊ

4. छात्रा का नाम	एश्वर्या वर्मा	पुत्री श्री विजय कुमार वर्मा	कक्षा–IV
5. छात्रा का नाम	नित्या कटियार	पुत्री श्री रविन्द्र कुमार कटियार	कक्षा–VI
6. छात्रा का नाम	मुस्कान	पुत्री श्री इमाम बक्श	कक्षा– I

3–ब्राईट लैण्ड इण्टर कालेज, त्रिवेणी नगर ,लखनऊ

7. छात्र का नाम	इन्द मोहन यादव	पुत्र श्री मंगरू प्रसाद यादव	कक्षा–XI
8. छात्रा का नाम	गरिमा रावत	पुत्री स्0 विषणु कुमार	कक्षा–VII
9. छात्र का नाम	विभव शुक्ला	पुत्र श्री राजेश शुक्ला	कक्षा–VII
10. छात्र का नाम	आयुष बाजपेई	पुत्र श्री शिव नारायण बाजपेई	कक्षा–XII
11 छात्र का नाम	हर्षित वर्मा	पुत्र श्री राम रूप वर्मा	कक्षा–X
12. छात्रा का नाम	ऋस्ति राम	पुत्री श्री शत्रुघन राम	कक्षा–IX
13. छात्र का नाम	कृष्णा जायसवाल	पुत्र स्व0 सुमित जायसवाल	कक्षा–VI
14. छात्रा का नाम	उर्वी शर्मा	पुत्री श्री अशोक शर्मा	कक्षा–III
15. छात्रा का नाम	अराध्या तिवारी	पुत्री श्री अविनाश तिवारी	कक्षा–III
16. छात्र का नाम	आशिष तिवारी	पुत्र श्री अनूप तिवारी	कक्षा–IV
17. छात्रा का नाम	नन्दनी गौतम	पुत्री श्री राम चन्द्र	कक्षा–VI
18. छात्र का नाम	रिशभ पा़ठक	पुत्र श्री आशिष पा़ठक	कक्षा–VIII
19. छात्र का नाम	अक्षत रस्तागी	पुत्र श्री मुकेश कुमार	कक्षा–IX
20. छात्रा का नाम	प्रशषति दीक्षित	पुत्री श्री संजीव नन्दन दीक्षित	कक्षा– IX

4–कैरियर कान्चेन्ट कालेज, विकास नगर ,लखनऊ

21. छात्र का नाम	आर्दश आर0 कृष्णनन	पुत्र श्री रमेश कृष्णनन	कक्षा–XIi
22. छात्र का नाम	इमरान खान	पुत्र इम्तयाज खान	कक्षा–IV
23. छात्र का नाम	आयुष कुमार मौर्या	पुत्र राजेश कुमार मौर्या	कक्षा– I

5–दयानन्द कन्या इन्टर कालेज, महानगर ,लखनऊ

24. छात्रा का नाम	सिम्मी मौर्या	पुत्री श्री रमेश मौर्या	कक्षा–XII
25. छात्रा का नाम	प्रीति पाल	पुत्री श्री राम चन्दर पाल	कक्षा–XII
26. छात्रा का नाम	कविता रावत	पुत्री श्री गोकुल रावत	कक्षा–XI
27. छात्रा का नाम	शीलू निषाद	पुत्री श्री सुन्दर लाल निषाद	कक्षा–XI

28. छात्रा का नाम	प्रिया जायसवार	पुत्री श्री अमित जायसवार	कक्षा–X
29. छात्रा का नाम	पूजा गुप्ता	पुत्री श्री बेचन गुप्ता	कक्षा– X
30. छात्र का नाम	अमित यादव	पुत्र राम किशन यादव	कक्षा– I
31. छात्रा का नाम	चान्दनी यादव	पुत्री राम किशन यादव	कक्षा– II
32 छात्रा का नाम	मनीषा थापा	पुत्री श्री देवराज थापा	कक्षा–XI
	6–द्रोणाचार्य एकेडमी, जानकीपुरम विस्तार,लखनऊ		
33. छात्रा का नाम	शीवि दिक्षित	पुत्री श्री अरूण दिक्षित	कक्षा–VI
	7–फ्लोरेन्स नाइटेंग्लि इण्टर कालेज, त्रिवेणी नगर ,लखनऊ		
34. छात्र का नाम	शांशिक रावत	पुत्र श्री गुरू चरन रावत	कक्षा–IV
35. छात्र का नाम	अब्दुर रहमान	पुत्र श्री शमी अहमद अंसारी	कक्षा–VII
36. छात्रा का नाम	आरती श्रीवास्तवा	पुत्री श्री रामू श्रीवास्तवा	कक्षा– X
37. छात्रा का नाम	प्रियंका गुप्ता	पुत्री स्व0 राजेश कुमार गुप्ता	कक्षा–XI
38. छात्रा का नाम	ज्योति त्रिवेदी	पुत्री स्व0 अविनेन्द्र त्रिवेदी	कक्षा–XII
39. छात्रा का नाम	शिवांगी शर्मा	पुत्री श्री राजेश शर्मा	कक्षा–XII
40. छात्रा का नाम	शिखा शुक्ला	पुत्री श्री नीरज शुक्ला	कक्षा–VI
41. छात्रा का नाम	आयुषी पाण्डेय	पुत्री स्व0 सुरेश पाण्डेय	कक्षा–VIII
42. छात्र का नाम	शुभम चौहान	पुत्र श्री ध्रुव चन्द्र चौधरी	कक्षा–IX
43. छात्रा का नाम	पूजा मिश्रा	पुत्री श्री राजेन्द्र मिश्रा	कक्षा–XI
44. छात्र का नाम	अमित वर्मा	पुत्र श्री मेवा लाल वर्मा	कक्षा–XI
45. छात्रा का नाम	मधुलिका कुमारी	पुत्री श्री कमलेश कुमार	कक्षा–XI
	8–हैप्पी डे स्कूल,सीतापुर रोड ,लखनऊ		
46. छात्र का नाम	राज कुमार	पुत्र श्री पुन्नू	कक्षा–VII
	9–लाल बहादुर सिंह मेमोरियल स्कूल, इन्दिरा नगर ,लखनऊ		
47. छात्रा का नाम	सलौनी गौतम	पुत्री श्री गणेश गौतम	कक्षा–IX
	10–लखनऊ एकेडमी हाईस्कूल, त्रिवेणी नगर ,लखनऊ		
48. छात्र का नाम	राहुल कनौजिया	पुत्र श्री राकेश कनौजिया	कक्षा–III
49. छात्र का नाम	कृष्णा कश्यप	पुत्र श्री दिलीप कुमार कश्यप	कक्षा–X
50. छात्रा का नाम	आशी सोनकर	पुत्री श्री बाबी सोनकर	कक्षा–VII
51. छात्रा का नाम	निधि विश्वकर्मा	पुत्री श्री राजेश विश्वकर्मा	कक्षा–VI
52. छात्रा का नाम	उजैरा	पुत्री श्री सैयद ग्यास अहमद	कक्षा–V
53. छात्रा का नाम	आरती शर्मा	पुत्री श्री बलराम शर्मा	कक्षा–IV
54. छात्रा का नाम	सीलम शर्मा	पुत्री श्री विनय प्रकाश	कक्षा–IV
	11–महामाना मालवीया विद्या मंदिर, गोमती नगर ,लखनऊ		
55. छात्र का नाम	मुक्तेश्वर उपाध्याय	पुत्र श्री रमा शंकर उपाध्याय	कक्षा–XII
56. छात्र का नाम	विश्वराज सिंह	पुत्र श्री राम सिंह	कक्षा–X
57. छात्रा का नाम	नेहा कश्यप	पुत्री श्री राम कुमार कश्यप	कक्षा–X

58. छात्रा का नाम	आयुषी सिंह	पुत्री श्री सुशील कुमार सिंह	कक्षा–V
59. छात्र का नाम	आलोक यादव	पुत्र श्री विभूति यादव	कक्षा–VI
60. छात्रा का नाम	विधि श्रीवास्तवा	पुत्री श्री विवेक श्रीवास्तवा	कक्षा–IX
61. छात्र का नाम	विवके यादव	पुत्र श्री हरीनाम यादव	कक्षा–V
62. छात्र का नाम	वैभव कश्यप	पुत्र श्री सक्तू कश्यप	कक्षा–VII
63. छात्रा का नाम	मान्या शुक्ला	पुत्री श्री अरविन्द शुक्ला	कक्षा–VIII
64. छात्र का नाम	तनवीर वर्मा	पुत्र श्री राम सरन वर्मा	कक्षा–IX
65. छात्र का नाम	अन्श	पुत्र श्री राम संजीवन	कक्षा–VI
66. छात्रा का नाम	अंकिता सिंह	पुत्री श्री अरविन्द प्रताप सिंह	कक्षा–VII
67. छात्र का नाम	अतुल कुमार गुप्ता	पुत्र श्री पवन कुमार गुप्ता	कक्षा–VIII
68. छात्र का नाम	मयंक सिंह	पुत्र श्री हरी सिंह	कक्षा–V
69. छात्रा का नाम	अनविष्का यादव	पुत्री श्री दिनेश कुमार	कक्षा–III

12–महात्मा बुद्ध मेमोरियल इन्टर कालेज,दर्शन गंज,अलीगंज,लखनऊ

70. छात्रा का नाम	नन्दनी कन्नौजियो	पुत्री श्री विश्व नाथ कन्नौजिया	कक्षा–V

13–नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइन्ड, गोमती नगर ,लखनऊ

71. छात्रा का नाम	आरती मिश्रा	पुत्री श्री सूर्य प्रकाश मिश्रा	कक्षा–III
72. छात्रा का नाम	रूपल रावत	पुत्री श्री गिरजा शंकर रावत	कक्षा–XI
73. छात्रा का नाम	शाजिया बेग	पुत्री श्री मोहम्मद मुख्तार बेग	कक्षा–IX
74. छात्र का नाम	फरदीन	पुत्र श्री मोहम्मद शकील	कक्षा–II
75. छात्र का नाम	सत्यम भाष्कर	पुत्र श्री श्याम लाल	कक्षा–VI
76. छात्र का नाम	चंदन वर्मा	पुत्र श्री मंजीत कुमार	कक्षा–VIII
77. छात्रा का नाम	मूनी कुमारी	पुत्री श्री श्याम लाल	कक्षा–VIII
78. छात्रा का नाम	पिंकी शर्मा	पुत्री श्री अनिल कुमार शर्मा	कक्षा–VII
79. छात्रा का नाम	अपूर्वा	पुत्री श्री राजेश बालमिकी	कक्षा– I
80. छात्र का नाम	अनुराग शुक्ला	पुत्र श्री नारायण शुक्ला	कक्षा–VIII

14–न्यू पब्लिक एकेडमी,,राजीव नगर ,कल्यानपुर,लखनऊ

81. छात्रा का नाम	नन्दनी यादव	पुत्री श्री अशोक कुमार	कक्षा–V

15–न्यू बाल विद्या मंदिर, अलीगंज ,लखनऊ

82. छात्र का नाम	संस्कार कश्यप	पुत्र श्री दिलीप कश्यप	कक्षा–VI
83. छात्रा का नाम	शिवानी कश्यप	पुत्री श्री संजय कश्यप	कक्षा–VI
84. छात्रा का नाम	खुशी वर्मा	पुत्री श्री राम वर्मा	कक्षा–II
85. छात्र का नाम	रोनित कश्यप	पुत्र श्री दिलीप कश्यप	कक्षा–V
86. छात्रा का नाम	जानहवी	पुत्री श्री अनिल	कक्षा–I

16–रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, सेक्टर–सी, विकास नगर ,लखनऊ

87. छात्र का नाम	अंकित सिंह नेगी	पुत्र श्री प्रेम सिंह नेगी	कक्षा–XI

17–रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, सेक्टर–14, विकास नगर ,लखनऊ

88. छात्रा का नाम	प्रियंका शर्मा	पुत्री श्री गिरीश चन्द्र शर्मा	कक्षा–XII

18–रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, पटेल नगर ,लखनऊ

89 छात्र का नाम	वाचस्पति पाठक	पुत्र श्री प्रकाश नारायण पाठक	कक्षा–VIII

19–सरस्वती शिशु मंदिर, इन्दिरा नगर ,लखनऊ

90. छात्र का नाम	प्रियांशु चौहान	पुत्र श्री हरी नाथ चौहान	कक्षा–IV
91. छात्र का नाम	कृष्ण कुमार	पुत्र श्री प्रमोद कुमार	कक्षा– IV
92. छात्रा का नाम	अंशिका प्रजापति	पुत्री श्री जय प्रकाश	कक्षा–III
93. छात्रा का नाम	शगुन चौहान	पुत्री श्री उमेश चौहान	कक्षा– IV
94. छात्र का नाम	कृष्णा यादव	पुत्र श्री साहिब लाल यादव	कक्षा– IV
95. छात्र का नाम	अवि राज बारी	पुत्र श्री संजीव बारी	कक्षा– II
96. छात्र का नाम	शिवा कश्यप	पुत्र स्0 अरूण कुमार कश्यप	कक्षा– II
97. छात्र का नाम	दिव्य प्रकाश मौर्या	पुत्र श्री सत्य प्रकाश मौर्या	कक्षा– II
98. छात्र का नाम	विनीत गौड़	पुत्र श्री पवन कुमार गौड़	कक्षा– III
99. छात्र का नाम	आर्दश कुमार	पुत्र श्री संजीव कुमार	कक्षा– V

20–सरस्वती शिशु मंदिर, नया गाँव,माडल हाउस ,लखनऊ

100. छात्र का नाम	अखिल अवस्थी	पुत्र श्री विनोद कुमार अवस्थी	कक्षा–X
101. छात्रा का नाम	स्वेता पाल	पुत्री श्री रघुनन्दन पाल	कक्षा–IV
102. छात्र का नाम	हर्षित चौरसिया	पुत्र श्री सोनू चौरसिया	कक्षा–VI

21–सरस्वती विद्या मंदिर इन्टर कालेज, इन्दिरा नगर ,लखनऊ

103. छात्रा का नाम	अर्पिता पाण्डे	पुत्री श्री अखिलेश चन्द्र पाण्डे	कक्षा–XII
104. छात्र का नाम	करण कुमार बालमिकि	पुत्र श्री सुरेश कुमार	कक्षा–X
105 छात्र का नाम	अतुल कुमार मिश्रा	पुत्र श्री राकेश कुमार मिश्रा	कक्षा–XI
106. छात्र का नाम	आकाश कुमार यादव	पुत्र श्री राकेश कुमार यादव	कक्षा–XI
107. छात्रा का नाम	ज्योति यादव	पुत्री श्री साहब लाल यादव	कक्षा–VII
108. छात्रा का नाम	ब.आकृति मौर्या	पुत्री श्री सत्य प्रकाश मौर्या	कक्षा–VIII
109. छात्रा का नाम	नेहा कुमारी	पुत्री श्री पवन कुमार	कक्षा–VIII
110. छात्रा का नाम	सजल श्रीवास्तवा	पुत्री श्री अनूप कुमार श्रीवास्तवा	कक्षा–IX
111. छात्रा का नाम	अनन्या यादव	पुत्री श्री अरविन्द कुमार यादवा	कक्षा–VI
112. छात्र का नाम	दुर्गेश कुमार	पुत्र श्री हरी पाल	कक्षा–XI
113. छात्रा का नाम	अनमोल श्रीवास्तव	पुत्री श्री अनूप कुमार श्रीवास्तवा	कक्षा–IX
114. छात्र का नाम	राहुल बालमिकी	पुत्र श्री अच्छे लाल	कक्षा–XI
115. छात्र का नाम	शिवम जायसवाल	पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जायसवाल	कक्षा–XI

22–सर्वोदय पब्लिक स्कूल, शिवलोक,त्रिवेणी नगर ,लखनऊ

116. छात्रा का नाम	प्राची कश्यप	पुत्री श्री विमलेश कुमार कश्यप	कक्षा–VI
117. छात्रा का नाम	प्रिया मानसी	पुत्री श्री राजेश कुमार	कक्षा–VII

23–शान्ति पब्लिक स्कूल, भरत नगर ,लखनऊ

118. छात्रा का नाम	आयुषी मौर्या	पुत्री श्री संतोष कुमार मौर्या	कक्षा–IX
119. छात्रा का नाम	प्रज्ञा अवस्थी	पुत्री स्व0 हरीशंकर अवस्थी	कक्षा–IX

24–श्री साई इन्टर कालेज,लखपेड़ाबाग,बाराबंकी

120. छात्र का नाम	सौरभ गौतम	पुत्र श्री राम खिलावन	कक्षा–VIII
121. छात्रा का नाम	अंजली भारती	पुत्री श्री कमलेश कुमार	कक्षा–IX
122. छात्रा का नाम	प्राची शुक्ला	पुत्री श्री रविन्द्र कुमार शुक्ला	कक्षा–VII

25–सेन्ट मिचेंलस स्कूल, बड़ा चांदगंज , लखनऊ

123. छात्रा का नाम	रिया सिंह	पुत्री श्री उमेश प्रताप सिंह	कक्षा–VII
124. छात्रा का नाम	गीतांजली सिंह	पुत्री श्री उमेश प्रताप सिंह	कक्षा–VII
125. छात्र का नाम	विभू गोस्वामी	पुत्र श्री अश्वनी कुमार गोस्वामी	कक्षा–III
126. छात्र का नाम	गौरव कुमार गोस्वामी	पुत्र श्री अश्वनी कुमार गोस्वामी	कक्षा–III

26–सेन्ट बेसिल कान्वेन्ट स्कूल, शिव नगर , खदरा, लखनऊ

127. छात्र का नाम	रोचक कश्यप	पुत्र श्री राम चन्दर कश्यप	कक्षा–VIII
128. छात्रा का नाम	अनुष्का कश्यप	पुत्री श्री राम चन्दर कश्यप	कक्षा–VI

27–वर्धमान विद्या मंदिर इन्टर कालेज, इन्दिरा नगर ,लखनऊ

129. छात्रा का नाम	अनुराधा आर्या	पुत्री श्री राम आधार आर्या	कक्षा–XII
130. छात्र का नाम	अंकित कुमार	पुत्र स्व0 रमेश कुमार	कक्षा–X
131. छात्र का नाम	पवन निषाद	पुत्र स0 राम नरेश	कक्षा–VII
132. छात्रा का नाम	अनामिका वर्मा	पुत्री स्व0 श्री गुरू प्रसाद वर्मा	कक्षा–X
133. छात्रा का नाम	शिवांगी जायसवार	पुत्री श्री इन्द्रेश जायसवार	कक्षा–VI

28–योगिता मोन्टेसरी स्कूल, भरत नगर,महिबुल्लापुर ,लखनऊ

134. छात्र का नाम	विशाल सिंह	पुत्र श्री हरनाम सिंह	कक्षा–III
135. छात्रा का नाम	तनु सिंह	पुत्री श्री दीपू सिंह	कक्षा–VI
136. छात्र का नाम	नीरज कुमार	पुत्र श्री जगदीश दास	कक्षा–VII
137. छात्रा का नाम	अजमैन बानो	पुत्री श्री आमीर हुसैन	कक्षा–V
138. छात्रा का नाम	तान्या कश्यप	पुत्री श्री राम गोपाल कश्यप	कक्षा–V
139. छात्र का नाम	अमन गौतम	पुत्र श्री राम नरेश गौतम	कक्षा–VI
140. छात्र का नाम	मोहम्मद इकलाक़	पुत्र मोहम्मद इसलाम	कक्षा–VI
141. छात्र का नाम	अरिन्जय कुमार विश्वकर्मा	पुत्र कमला कान्त विश्वकर्मा	कक्षा–IV

शिक्षा सत्र 2018–19 में स्नातक पाठ्यक्रम में शिक्षा सहायता पाने वाले चयनित छात्राओं की सूची

लखनऊ विश्वविद्यालय,विश्वविद्यालय रोड,लखनऊ

1.छात्रा का नाम	कु. ईशा सिंह	पुत्री श्री राज कुमार सिंह	**पाठ्यक्रम**	**B.Sc.(Part III)**
2.छात्र का नाम	आश्वल दीक्षित	पुत्र श्री सतेन्द्र कुमार दीक्षित	**पाठ्यक्रम**	**BCA.(Part I)**

महिला विद्यालय,अमीनाबाद,लखनऊ

2.छात्रा का नाम	कु. शिखा वर्मा	पुत्री श्री राम कुमार वर्मा	**पाठ्यक्रम**	**B.Sc.(Part III)**
3.छात्रा का नाम	कु. कोमल प्रजापति	पुत्री श्री सहदेव प्रजापति	**पाठ्यक्रम**	**B.com.(Part II)**

ईशाबेला थाबर्न कालेज,लखनऊ

4.छात्रा का नाम	कु. प्रिया सिंह	पुत्री श्री राधे श्याम सिंह	**पाठ्यक्रम**	**B.A.(Part II)**

जय नारायण पी.जी. कालेज,लखनऊ

1.छात्रा का नाम	कु. आयुषी पाण्डेय	पुत्री श्री प्रदीप कुमार पाण्डेय	**पाठ्यक्रम**	**B.com.(Part I)**

(इं0 जे0 बी0 अग्रवाल)
महासचिव(प्रशासन)

भावना का सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ

भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) ने बुजुर्गों की देखभाल एवं उनसे निरन्तर सम्पर्क बनाये रखने के उद्देश्य से एक प्रकोष्ठ का गठन किया हुआ है जिसे पहले कम्पेनियनशिप तथा हैल्पलाइन प्रकोष्ठ के नाम से जाना जाता था। दिनांक 25 मार्च-2016 से इसी प्रकोष्ठ को सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ नाम दे दिया गया है। इस प्रकोष्ठ के मुख्य कार्य हैं :-

1. आपात स्थिति में बुजुर्गों को यथा वांछित सहयोग तत्परता से उपलब्ध कराना।
2. जिन अतिवरिष्ठ नागरिकों की सन्तानें उनसे दूर रह रही हैं, उनसे सम्पर्क रखते हुए आवश्यकतानुसार उनकी देखभाल की सुदृढ़ व्यवस्था करना।
3. भावना के दिवंगत हो चुके सदस्यों की विधवाओं से भी सम्पर्क करके आवश्यकतानुसार उनकी देखभाल की सुदृढ़ व्यवस्था करना।
4. व्यक्तिगत सम्पर्क करके निष्क्रिय सदस्यों को समिति के कार्यक्रमों के प्रति सक्रिय बनाने का प्रयास करना।
5. यदाकदा भावना सदस्यों तथा उनके परिजनों की सक्रिय भागीदारी वाले विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के कार्यक्रम, पिकनिक तथा पर्यटन आदि भी नियोजित एवं कार्यान्वित करना।
6. भावना सदस्यों के जन्मदिन तथा विवाह की वर्षगांठ पर उनको व्यक्तिगत मिलकर, फोन से, एस.एम.एस अथवा ई-मेल द्वारा शुभकामना व्यक्त करना।
7. वैवाहिक जीवन के 50 वर्ष सफलतापूर्वक पूरे कर चुके सदस्य-दम्पत्तियों का सार्वजनिक अभिनन्दन करना।

चूँकि लखनऊ शहर काफी बड़ा है अतः पूरे शहर को 10 जोन में बाँटते हुए प्रत्येक जोन के लिए एक प्रभारी नियुक्त किया हुआ है। भावना के सभी सदस्य अपने अपने जोन के प्रभारी से नियमित सम्पर्क बनाये रखें इसलिए उन प्रभारियों के नाम, पते तथा फोन नम्बर नीचे दिए जा रहे हैं -

जोन	क्षेत्र का विस्तार	प्रभारी	प्रभारी का पता	फोन-प्रभारी
जोन-1	इन्दिरा नगर तथा आसपास का क्षेत्र	श्री देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल	15/51 इन्दिरा नगर लखनऊ	09198038889
जोन-2	राजेन्द्र नगर, मोती नगर, आर्य नगर, ऐशबाग तथा आसपास का क्षेत्र	श्री विनोद चन्द्र गर्ग	सी-20 ई-पार्क, महानगर विस्तार, लखनऊ	09415012307
जोन-3	आई.आई.एम रोड, त्रिवेणी नगर सीतापुर रोड के दोनों ओर का क्षेत्र	श्री दीनबन्धु यादव	538क/211, त्रिवेणी नगर सीतापुर रोड, लखनऊ	09956788187
जोन-4	विकासनगर तथा आसपास का क्षेत्र	श्री ओमप्रकाश गुप्ता	11, चन्द्रलोक कालोनी, अलीगंज, लखनऊ	09415022932
जोन-5	कानपुर रोड तथा रायबरेली रोड के दोनों ओर का क्षेत्र	श्री अमर नाथ	401-ए,उदयन-1 बंगला बाजार, लखनऊ	09451702105
जोन-6	महानगर तथा आसपास का क्षेत्र	श्री राजेन्द्र कुमार चुघ	डी-43, महानगर एक्सटेंशन, लखनऊ	09450020669
जोन-7	निराला नगर तथा आसपास का क्षेत्र	डॉ. छेदा लाल वर्मा	166, फैजाबाद रोड, निकट रामाधीन कालेज, लखनऊ	09919960317
जोन-8	जानकी पुरम (विस्तार सहित) तथा आसपास का क्षेत्र	श्री सुशील कुमार शर्मा	13/24 यमन, सहारा एस्टेट जानकी पुरम्, लखनऊ	08765351190
जोन-9-	गोमती नगर का सम्पूर्ण क्षेत्र	श्री तीर्थराज मौर्या	504, ओ-ब्लॉक, शारदा अपार्टमेन्ट्स गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ	09412169590
जोन-10-	अलीगंज एवं आसपास का क्षेत्र	श्री ओम प्रकाश पाठक	111, चन्द्रलोक कालोनी, अलीगंज, लखनऊ।	09415022932

उक्त सभी प्रभारियों के कार्यो का अनुश्रवण करने तथा उन्हें सहयोग देने के लिए भावना समिति के उपमहासचिव श्री रमाकांत पाण्डेय को संयोजक नियुक्त किया गया है। किसी भी क्षेत्र का कोई भी प्रभारी तथा उस क्षेत्र में रहने वाला भावना का कोई भी सदस्य उनसे निम्नलिखित पते अथवा फोन पर सम्पर्क कर सकता है।

श्री रमा कांत पाण्डेय- 13-शिवाजी इन्क्लेव, सी ब्लाक, इन्दिरा नगर, लखनऊ, फोन-09839395439, 09415584568

हम समझते आप सबकी भावना। हर कदम पर, आप सबके, 'भावना'
भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति द्वारा आम जन की सेवा के लिये संचालित विभिन्न प्रकोष्ठ

निर्धन जन सेवा प्रकोष्ठ

जो सर्वसमर्थ है उनके लिए शीत ऋतु बहुत ही सुहानी और सैर-सपाटे, पिकनिक वाली होती है। किन्तु यही ऋतु उनके लिए अत्यंत दुखदायी होती है जिनके पास न तन ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र है, न ओढ़ने-बिछाने के लिए बिछौने हैं और न सिर छिपाने के लिए कोई कुटिया ही है। आइये हम सब मिलकर उनकी मदद करें जिनके पास पहनने, बिछाने, ओढ़ने के लिए कुछ भी नहीं है।

भावना ने निर्णय लिया है कि गत् वर्षों की भांति इस वर्ष भी शीत ऋतु में लखनऊ नगर तथा आसपास के ग्रामीण इलाकों के गरीब एवं असहाय जनों को तत्काल नये कम्बल तथा ओढ़ने, बिछाने एवं पहनने के नए अथवा पुराने कपड़े, बर्तन आदि उपलब्ध कराए जायें। अतः भावना के सभी सम्मानित सदस्यों एवं अन्य संवेदनशील समर्थ नागरिकों से अनुरोध किया जाता है कि वे कृपया यथाशीघ्र इस हेतु अपनी ओर से यथासंभव सहयोग प्रदान करें एवं अपने सगे-संबंधियों तथा मित्रजनों को भी प्रेरित करें कि वे भी इस हेतु अपना योगदान देने की कृपा करें।

भावना द्वारा जो नए ऊनी कम्बल इस हेतु थोक में खरीदे जा रहे है। उनका मूल्य प्रति कम्बल 250 रुपये है। जो भी सहृदय व्यक्ति नए कम्बलों की मद में सहयोग देना चाहे वे जितना कम्बल देना चाहे उतने कम्बलों का मूल्य नगद अथवा लखनऊ में "at par" भुगतान योग्य Bharatiya Varishtha Nagarik Samiti के हित में जारी चेक से देने का कष्ट करें। अन्य सामग्री (पुरानी अथवा नई) भी कृपया यथाशीघ्र देने का कष्ट करें।

अपने सदस्यों तथा अन्य संवेदनशील लोगों से प्राप्त सहयोग के लिए भावना की प्रबंधकारिणी उनकी आभारी होगी।

विनोद कुमार शुक्ल	**योगेन्द्र प्रताप सिंह**	**देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल**
अध्यक्ष	महासचिव कार्यान्वयन	उप महासचिव (कार्यान्वयन)
मो.: 09335902137	मो. 09412417108	मो. 09198038889

गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चों के लिए साक्षरता अभियान

भारत एवं भारतवासियों की समग्र प्रगति के लिए देश के उन बच्चों को साक्षर एवं संस्कारित किया जाना नितांत आवश्यक है जो अत्यंत गरीब, बेसहारा और लावारिस हैं तथा जिन्हें हम Street Children कह कर सम्बोधित करते हैं। इसलिए भावना द्वारा ऐसे बच्चों को साक्षर बनाने एवं उन्हें संस्कारित करने के उद्देश्य से झुग्गी–झोपड़ियों की बस्तियों में अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रों की शृंखला स्थापित करने तथा संचालित करने का निर्णय लिया गया है। इस अभियान के अंतर्गत पहला शिक्षण केन्द्र लखनऊ में माह मई 2015 से प्रारम्भ किया जा चुका है। जैसे–जैसे संसाधन उपलब्ध होंगे, वैसे–वैसे इस प्रकार के और शिक्षण केन्द्र लखनऊ में तथा अन्य स्थानों पर भी प्रारम्भ किये जायेंगे। एक शिक्षण केन्द्र को स्थापित करने तथा संचालित करने हेतु वार्षिक व्यय लगभग एक लाख रुपये होने का अनुमान है। साक्षरता अभियान के अंतर्गत जो बच्चे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि वाले पाये जायेंगे तथा जिनमें नियमित औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने की अत्यधिक लगन दिखेगी उनके लिए भावना द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में विधिवत शिक्षण की व्यवस्था भी यथासम्भव की जाएगी।

सुधी, सहृदय एवं संवेदनशील महानुभावों/संस्थाओं से विशेष अनुरोध

देश हित के इस महायज्ञ को यथाशक्ति अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें। एक शिक्षण केन्द्र में दो शिक्षक हैं। प्रत्येक का मासिक वेतन तीन हजार रुपये है। इस प्रकार शिक्षकों के वेतन की मद में ही वर्ष भर में 72,000 रुपये का व्यय होगा। वर्ष भर में अन्य विभिन्न व्यवस्थाओं पर 28,000 रुपये खर्च होने का अनुमान है। एक शिक्षण केन्द्र में अधिकतम 20 बच्चों को पंजीकृत किया जा रहा है। इस प्रकार एक बच्चे को साक्षर एवं संस्कारित करने हेतु एक वर्ष का व्यय 5000 रुपये आ रहा है।

अतः अनुरोध है कि कम से कम एक बच्चे को साक्षर एवं संस्कारित करने हेतु एक वर्ष में व्यय होने वाली धनराशि 5000 रुपये, समिति के साक्षरता अभियान कोष में दान करें ताकि आपके सहयोग से कम से कम एक गरीब, बेसहारा, लावारिस बच्चा साक्षर एवं संस्कारित हो सके। अपने अन्य सक्षम परिजनों तथा इष्ट मित्रों को भी इस पुण्य कार्य में यथा–सामर्थ्य सहयोग देने हेतु प्रेरित करें।

विनोद कुमार शुक्ल	**जगत बिहारी अग्रवाल**	**योगेन्द्र प्रताप सिंह**
अध्यक्ष	महासचिव प्रशासन	महासचिव (कार्यान्वयन)
मो.: 09335902137	मो. 09450111425	मो. 09412417108

अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

15 अगस्त 2018 को लखनऊ-बिजनौर रोड पर औरंगाबाद रेलवे क्रासिंग के निकट भावना द्वारा संचालित अनौपचारिक शिक्षण के अस्थायी स्कूल पर स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण किया गया। भावना के उपमहासचिव इं. सतपाल सिंह और वृक्षारोपण को समर्पित श्री चन्द्रभूषण तिवारी जी ने ध्वजारोहण किया। स्कूल के बच्चों ने समवेत स्वर में राष्ट्रगान का गायन किया। इस अवसर पर इस प्रकोष्ठ के सदस्यों में उक्त के अतिरिक्त अमरनाथ, दिलीप वीराणी, श्री महेश चन्द्र सक्सेना, डे-सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ के सदस्य श्री ललित कुमार जी एवं यू.पी.एस.आई.डी.सी. के इंजीनियर श्री प्रमोद कुमार वर्मा के अतिरिक्त स्थानीय जनमानस उपस्थित था। बारिश के कारण यद्यपि सांस्कृतिक कार्यक्रम न हो सके लेकिन स्कूल की अध्यापिका द्वय श्रीमती आशा यादव और श्रीमती सरिता रावत के सद्प्रयत्नों से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका। समापन पर सभी स्कूली बच्चों और उपस्थित जनसमुदाय को मिष्ठान वितरण किया गया। इस अवसर पर श्री सतपाल सिंह जी के आवासीय परिसर से कुछ स्थानीय नागरिक भी उपस्थित हुए जिन्होंने सभी बच्चों और जनसमुदाय को खाद्यान्न व अन्य उपहार वितरित किए।

इस आयोजन के समापन के पश्चात इस प्रकोष्ठ के यहाँ उपस्थित सभी सदस्यों ने परस्पर विचार विमर्श करके दोनों अध्यापिकाओं का मानदेय दो हजार रुपये प्रतिमाह से बढ़ाकर दो हजार पांच सौ रुपये प्रतिमाह कर निर्णय लिया। यह निर्णय अगस्त-2018 के मानदेय से लागू माना जाएगा।

अमरनाथ, सचिव-अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

---

28 जुलाई, 2018 को हुई बैठक का कार्यवृत्त - पृष्ठ 3 का शेष...

लखनऊ में आयोजित होगा। तत्सम्बंधी व्यवस्थायें वरिष्ठ उपाध्यक्ष महोदय के नेतृत्व में निम्नलिखित पदाधिकारियों द्वारा सुनिश्चित की जायेंगी।

श्री तुंगनाथ कनौजिया, उपाध्यक्ष; श्री राम लाल गुप्ता, प्रमुख महासचिव; श्री जगत बिहारी अग्रवाल, महासचिव (प्रशासन); श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, महासचिव (कार्यान्वयन); श्री जगमोहन लाल जायसवाल, उपमहासचिव; श्री राजेन्द्र कुमार चुघ, सचिव; श्री राज देव स्वर्णकार, सचिव; श्री सुशील कुमार शर्मा, सम्पादक; श्री राम मूर्ति सिंह एवं श्री ओम प्रकाश गुप्ता।

समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती संयुक्ता भाटिया, महापौर लखनऊ रहेंगी। उनकी सहमति प्राप्त की जा रही है।

10. माननीय सम्प्रेक्षक, श्री मनोज कुमार गोयल ने भावना के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम हेतु 5000 रुपये की सहयोग-राशि प्रतिवर्ष देने की घोषणा की। सभा ने करतल ध्वनि से उन्हें धन्यवाद दिया।
11. अध्यक्ष महोदय की सहमति से उपमहासचिव श्री सतपाल सिंह द्वारा निमंत्रित ड्रीम एण्ड ब्यूटी चैरिटेबल ट्रस्ट, लुधियाना के प्रतिनिधियों द्वारा दोराहा में स्थापित एवं संचालित अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित ओल्ड एज होम "Heavenly Palace" का एक मल्टी-मीडिया प्रस्तुतीकरण किया गया जिसे सभी ने पंसद किया।

कार्यक्रम के अंत में सभा में उपस्थित सभी सदस्यों की ओर से तथा अपनी ओर से भी अध्यक्ष महोदय ने बैठक के मेजबान सदस्यमाननीय श्री राम लाल गुप्ता, श्री सतपाल सिंह, श्री राम बाबू गंगवार, श्री युगल किशोर गुप्ता तथा श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा को धन्यवाद दिया एवं सभी को स्नेहभोज के लिये आमंत्रित किया।

जगत बिहारी अग्रवाल
महासचिव (प्रशासन)

स्व. रमेश चन्द्र तिवारी स्मृति पुरस्कार

भावना के विशिष्ट स्व. रमेश चन्द्र तिवारी जी की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी जी श्रीमती वीणा तिवारी जी ने रमेश चन्द्र तिवारी स्मृति पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रतिवर्ष देने का संकल्प लिया है। यह पुरस्कार भावना द्वारा संचालित शिक्षा सहायता योजना के अन्तर्गत शिक्षा पा रहे उन दो विद्यार्थियों को दिया जायेगा जो कक्षा 12 तथा कक्षा 10 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों को दिया जायेगा। कक्षा 10 के छात्र को 6,000/- तथा कक्षा-12 के छात्र को 15000/- प्रदान की जाएगी।

18th AISCCON National Conference, Hyderabad (Telangana)

Organized by Association of Senior Citizens, Hyderabad

29th and 30th NOVEMBER 2018

Venue : **"CLASSIC Garden"**, H.No- 152, Ranibagh, Balamrai, Secunderabad-500003 Telangana

Dear Sir / Madam,

We, **"The Association of Senior Citizens Hyderabad"**, are being given the honour to organize **"18th AISCCON National Conference"** which is going to be held on **29th and 30th November, 2018** in Hyderabad, Telangana. You may register as an individual or do the group booking. The registration are offered in two categories, one is delegates the other is distinguished delegates. The distinguished delegates will pay the premium registration fee and will be entitles to extra privileges.

Delegate fees:

Category	On or before 15th October	after15th October
Delegate	Rs. 1500/-	Rs. 1800/-
Distinguished Delegate	Rs. 2000/-	Rs.2500/-

Extra Privileges to Distinguished Delegates

Following will be the privileges of the distinguished guests,

- their name and stamp size photograph will appear in the souvenir,
- they will be provided special seating arrangement in the Hall.
- there will be a separate counter for them for meals

Room Tariff :

Accommodation Type	Occupancy per room	Tariff for one person	Tariff for one room
Dormitory	Multiple	Rs 500/- per bed per night	NA
Twin sharing - Non Ac Room	2	Rs. 800/- per night	Rs. 1600/- per night
Twin sharing - Ac Room	2	Rs. 1000/- per night	Rs. 2000/- per night

To register as individual kindly fill registration/accommodation forms attached with this letter. for Group booking pl fill the details of the group leader in the registration/accommodation forms and the details of the group members in the respective annexure.

Please send the duly filled copy to the address of correspondent.

Note: Details of payment of delegate fees and the accommodation fees (Demand draft / Cheque/ NEFT) are required to be submit.

Details for Cheque/Demand Draft:

NEFT / DD payable at **Hyderabad,Telangana** : (Any Nationalized Bank) Drawn in favor of :

"18th AISCCON NATIONAL CONFERENCE Hyderabad"

Bank name : Andhra Bank

Address : R.P.Road Branch, SD Road, Hyderabad- 500003

Account No: 050510100126864 , IFS Code : ANDB0000505

Address for correspondence:

Co-Chairman, Inder Mohan Bhalla

Flat No. 311, Emerald Building. Amrutha Hills Appts. Punjagutta, Hyderabad 500082.

LL: 040-23413278/ Mob: 98492 44480, Email: imbhalla1945@gmail.com

Looking forward to welcome you at Hyderabad.

With kind regards,

Secretary

Organizing Committee

18th AISCCON NATIONAL CONFERENCE HYDERABAD

Venue :

"CLASSIC GARDENS", H.No. 152, Ranibagh, Balamrai, Near Paradise, Secunderabad - 500 003. Telangana.

Hosted by :

Association of Senior Citizens of Hyderabad.

Lions Bhavan, Second Floor, Paradise Circle, Secunderabad - 500003.

E-mail : info@aiscconconference.org, Phone : 040-48565326, www.aiscconconference.org

PATRONS

Hon'ble Justice **Subhashan Reddy**
Ex Lokayuktha for AP, Telangana
Former Chief Justice, TamilNadu, Kerala High Court.

Hon'ble **Sri Vijayarama Rao**
Ex Director CBI
Former State Minister

ORGANIZING COMMITTEE

Sri D. N. Chapke
President, AISCCON
98200 21224

Sri R. N. Mital
Chairman
905 200 4913

Sri. I. M. Bhalla
Co-Chairman
98492 44480

Sri T. Hanumantha Rao &
98668 77711
Sri V. Mohan Reddy
800 850 1716
V. Chairman
Public Relations, Fund raising

Sri R. K. Gopalan
General Secretary
Co-Ordination Accommodation
99851 96207

Sri C. Shankar Rao
Secretary
Registration, Accommodation, Printing, 98484 30914

Sri B. A. Setty
Treasurer
Bank, Cash, Registration, Reservation 94920 52110

Ms. Pushpalatha
Jt. Treasurer
Registration, Website, Emails, Reservation 7382 178 220

Mrs. Rohini Rao
Sri. Karunakar
Public Relation, Print & Electronic Media, Brochures, Circulars 97011 33223

Dr. Gurajada Shobha
Dr. R.H.G Rau
Souvenir, Articles, Printing, Advertisements, 92465 46584

Mrs. Vaijayanthi
Secretary Womens' Wing

Sri. Chander Gupta
Sri. Ravi Srivastav
Posting, Transport, Purchases

Advisers
Dr. P. Vyasamoorthy
Dr. G. Nageshwara Rao
Sri. Srinivasulu
Sri. B. Omprakash
Sri. T Bhomanna

August 1, 2018

Dear friends,

I have the pleasure of extending a very warm and cordial invitation to you and your family/friends on behalf of the senior citizens of Telangana, to the 18th National Conference of AISCCON which is going to be held in the Twin Cities on November 29 & 30, 2018. It is being hosted by the elders of Telangana and organized by the Association of Senior Citizens of Hyderabad.

Hyderabad is a beautiful historic city with many places worth a visit. Our next brochure will give details about them.

We can assure you that this Conference will be a unique experience. It will include honoring our elders who have crossed the land mark age of 100 years and the awardees of various contests organized by AISCCON. The five technical sessions with learned speakers from India and abroad will not only be interesting, will also give you new ideas to ponder about..

The events during the day will apprise you of what is happening in this field in India and our State and later in the day you will get a taste of its culture.

On the second day there will be a parallel conference organized and managed by ladies to discuss their specific problems, and lo, almost at the end of the day there will be a fashion show with the famous South Indian Sarees.

There will be stalls exhibiting Hyderabadi bangles and pieces of art crafted in pearls and with other South Indian specialties where you can spend your spare time. You can get more details about this event on website: **www.aiscconconference.org**

I therefore, request you to kindly fill up the registration forms for your self and your friends and forward it to us at the earliest with the fees. If you will need accommodation also, kindly do not forget to fill the relevant forms and send to us with the prescribed amount.

Hoping to meet you during the Conference,
Yours sincerely,

R.N.Mital,
Chairman 18th AISCCON National Conference

भावना का पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2018 के आगमन से पूर्व ही कुछ समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से कुछ गोष्ठियों का आयोजन हुआ। मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा हुई :-

1. पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ (भावना) की बैठक दिनांक 3.5.2018 को सायं 6.30 बजे श्री पाल प्रवीण के निवास अलीगंज, लखनऊ में भावना के अध्यक्ष श्री वी.के. शुक्ला जी की अध्यक्षता में आहूत हुई थी। मुख्य निर्णय यह लिया गया कि पर्यावरण गोष्ठियां तो जून 2018 में भी आहूत की जाएगी किन्तु वृक्षारोपण के कार्यक्रम वर्ष में जुलाई व अगस्त में विभिन्न विद्यालयों, पार्कों में होगा।

2. भावना के सक्रिय सदस्यों यथा श्री पुरुषोत्तम केसवानी जी व श्री पाल प्रवीण ने अलग-अलग प्रयास करके मई 2018 में 3 विद्यालयों के नए सत्र आरम्भ हो जाने पर वृक्षारोपण व गोष्ठियों की रूपरेखा बनाई। विद्यालयों के प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों ने पूरी रुचि दिखाई।

3. पर्यावरण से सम्बन्धित पृष्ठभूमि, लेख प्रमुख जानकारियां व ठोस कार्यक्रमों को आन्दोलन का रूप देने पर सामग्री लगभग तैयार की जा चुकी है जिनकी फोटोस्टेट प्रतियां सभी को गोष्ठियों में उपलब्ध कराई जाएगी।

4. गत्वर्ष मई व जून 2017 में विभिन्न पार्कों व स्थानों पर जो गोष्ठियां भावना के बैनर के साथ आयोजित की गई थी व 25 बिन्दुओं प्रश्नोत्तरी में सराहनीय प्रदर्शन प्रतिभागियों ने किया था उसको इस वर्ष भी करेंगे। सभी की सहभागिता हेतु प्रार्थना है।

5. भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) के 50 से 60 सदस्यों से परस्पर सम्पर्क तथा मोबाइल पर लगातार वार्ता करके उनकी गोष्ठियों में उपस्थिति व सहभागिता हेतु शीघ्र ही अनुरोध किया जा रहा है।

6. हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि पर्यावरण को सुधारने में हमें अधिक से अधिक सदस्यों का मार्गदर्शन, मुख्य बिन्दुओं के क्रियान्वयन हेतु समर्थन व सहयोग प्राप्त होगा।

पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ के 6-7 सदस्यों द्वारा सभी लक्ष्य पूर्ण नहीं किए जा सकेंगे वरन अधिक से अधिक सदस्यों को एक साथ मिलकर आन्दोलन चलाकर कार्य करना होगा।

भावना के पर्यावरण प्रकोष्ठ की बैठक डे-सेन्टर, विज्ञानपुरी, महानगर लखनऊ में दिनांक 4.8.18 (जड़ी-बूटी दिवस) प्रातः 11.00 बजे को आहूत हुई। निम्न सदस्यों ने भाग लिया :-

1- श्री टी.एन. कनौजिया (अध्यक्षता की), 2- श्री ए.पी. सिंह, 3- डॉ. वाई.पी. सिंह, 4- श्री पुरुषोत्तम केसवानी, 5- सी.एस. गौतम, 6- श्री राजदेव स्वर्णकार, 7- पाल प्रवीण

अध्यक्ष जी की अनुमति से श्री पाल प्रवीण ने पृष्ठभूमि नोट्स गत बैठकों के विवरण व मुख्य निर्णयों से सभी को अवगत कराया। वृक्षारोपण जो माह अगस्त 18 में विभिन्न विद्यालयों अथवा स्थानों में होगा उसकी तिथियां निश्चित की गई।

1. 15.8.18 को जानकीपुरम् विस्तार शुक्ला चौराहा रसूलपुर कायस्थ के समीप आर्य गुरुकुल में प्रातः 9.30 बजे होगा जहां पांच फलदार पौधे रोपे जाएंगे।

2. 20.8.18 को एस.जी.पी.जी.आई. रायबरेली रोड पर 10 पौधों का रोपण होगा। सभी तैयारियां गड्ढे खोदना पौधों को उपलब्ध कराना आदि की व्यवस्था हेतु वृक्षबाबा श्री चन्द्र भूषण तिवारी (वालंटियर) जी के सहयोग से होगा।

3. 22.8.18 को स्वाध्याय केन्द्र निराला नगर में भारतीय विकास परिषद (निराला नगर) के सहयोग से होगा। स्थल व समय मोबाइल द्वारा सभी को सूचित किया जाएगा।

4. पर्यावरण गोष्ठियां आर.के. कालेज अलीगंज में आहूत की जायेगी। दिनांक व समय की सूचना सभी सदस्यों को मोबाइल पर समय से पूर्व दी जायेगी।

उपरोक्त के अतिरिक्त ब्राइटलैंड कालेज मड़ियांव रोड पर अगस्त के अन्तिम सप्ताह में श्री मानस (संस्थापक) ब्राइटलैंड कॉलेज की स्मृति में छात्रों द्वारा पांच पौधों का रोपण व पर्यावरण गोष्ठी आहूत की जायेगी जिसकी सूचना समय से पूर्व दी जायेगी।

- पाल प्रवीण
संयोजक सचिव पर्यावरण प्रकोष्ठ भावना

उ.प्र. सरकार द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम

41 गांवों में होगा एक लाख पौधरोपण – गोमती संरक्षण अभियान के तहत चयनित 41 गांवों में एक साथ एक लाख से अधिक पौधे रोपे जाएंगे। गड्ढे खुदवाए जा रहे हैं। 15 अगस्त यानि स्वतंत्रता दिवस पर पौधरोपण अभियान को शुरू कराने की कवायद है। उपायुक्त श्रम एवं रोजगार राजमणि वर्मा को अभियान का नोडल बनाया गया है।

10 किमी की परिधि में होगा पौधरोपण : गोमती संरक्षण अभियान के तहत चयनित 41 गांव दस किलोमीटर की परिधि में है। इनमें बीकेटी ब्लाक की कठवारा, अकडरिया कला, दुधरा, सुलतानपुर, शिवपुरी व जमखनवा ग्राम पंचायतें शामिल हैं। वहीं, चिनहट विकास खंड की रैथा, धतिंगरा, बौरूमऊ, दुगवर, सरौरा, घैला, बाघामऊ, चंदियामऊ, देवरिया व मेहौरा ग्राम पंचायत को लिया गया है। इसी तरह गोसाईंगंज के बक्कास, चुरहिया, नूरपुर बेहटा, फरीदपुर, सुरियामऊ, गौरिया कला, धौरहरा, मोहम्मदाबाद, घुसकर, रहमतनगर, सलेमपुर व बरूआ में पौधरोपण कराया जाएगा। अभियान में काकोरी की जेहटा, सैथा, काकराबाद, गोपरामऊ, बंशीगढ़ी व माल की बहरौरा, शाहपुर गोड़वा, टिकरीकलां, बदैंया, मड़वाना, मंझीनिकरोजपुर, कोलवाभनौरा व मझौवा ग्राम पंचायत भी शामिल हैं।

प्राथमिकता पर पौधरोपण, अधिकारी करेंगे निगरानी : यूं तो राजधानी को सभी 570 ग्राम पंचायतों में करीब 6.38 लाख पौधे रोपे जाएंगे। लेकिन गोमती संरक्षण अभियान के तहत चयनित 41 गांवों में प्राथमिकता पर पौधरोपण कराया जाएगा।

एनबीटी-16.07.2018

बड़े काम के है पेड़ : पौधे जड़, तना, पत्ती, छाल, और फूल तक की उपयोगिता वाले पौधों की दुनिया एकदम निराली है। ये निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करते हैं। प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अनगिनत प्रकार के लाभ पहुंचा रहे हैं। ऐसे पौधरोपण में हमें अच्छे और लाभकारी का चयन करना चाहिए।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ – विशेषज्ञों के अनुसार मार्गों के किनारे छायादार और ऑक्सीजन देने वाले पीपल, बरगद, नीम, अर्जुन और जामुन लगाने चाहिए। आर्थिक उपयोग के लिए आम, अमरूद, आंवला के अलावा पॉपलर लगाना पर्यावरण संगत है।

प्रदूषण के रामबाण : धूप, तापमान और अन्य उत्सर्जनों को रोकने वाले पौधे-अमलतास,नीम, शीशम, बांस, पीपल, मोलश्री, आम, जामुन, अर्जुन, सागवान इमली।

कूड़ा करकट वाली जमीन उपयोगी बनाने में सक्षम पौधे : अर्जुन, गुलमोहर, सिरस, बबूल, अमलतास, कदंब,

ध्वनि प्रदूषण रोकने वाले पौधे- नीम, कचनार, बरगद, पीपल, सेमल।

गैसीय प्रदूषकों से निपटने में सक्षम पौधे – बेल, नीम, सिरस, नीम, बोगनविलिया, पीपल, शीशम, महुआ, इमली।

भूमि सुधारक पौधे : सीएसआईआर ने 'रिवाइटलाइजेशन ऑफ मार्जिनल वेस्टलैंड' परियोजना के तहत ऊसर, क्षारीय, लवणयुक्त या भारी धातुओं के कारण बंजर हो गई भूमि के सुधार हेतु औषधीय एवं सुगंधित पौधों को चिन्हित किया है। इसमें नींबूघास, पामरोज, वेटीवर, कैमॉमिल, कालमेघ, खस, जावा घास, सेट्रोनिला आदि शामिल है। वैज्ञानिकों द्वारा ऊसर व क्षारीय भूमि पर इनका परीक्षण किया जा चुका है।

एक हेक्टेयर में लगाए गए पोधों के बड़े होने पर कार्बन डॉईऑक्साइड अवशोषण क्षमता 6 टन है।

औषधीय/सुगंधित पौधे – औषधीय गुणों की दो हजार से ज्यादा देसी प्रजातियों और सुगंधित गुणों वाली 1300 प्रजातियों की खास पहचान है। आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध-चिकित्सा जैसी देशज पद्धतियों में इनकी विशेष मांग है।

12 किग्रा. एक साल में एक सामान्य पेड़ द्वारा कार्बन डाईआक्साइड गैस सोखी जाती है जबकि यही पेड़ साल भर में चार व्यक्तियों के लिए जरूरी प्राणवायु जितनी मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ता है।

गुणों की खान : दुनिया में उपयोग की जाने वाली 80 फीसदी दवाएं पोधों से प्राप्त की जाती है। कुल पादप प्रजातियों में से केवल दो फीसद में ही औषधीय क्षमता का परीक्षण किया जा सका है। सभी प्रजातियों में इस क्षमता का परीक्षण किए जाने पर स्थिति कुछ और ही होगी।

भोजन : मानव द्वारा 3000 पादप प्रजातियों का खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है। दुनिया का 90 फीसद खाद्य पदार्थ पोधों की केवल 20 प्रजातियों में तैयार होता है।

औद्योगिक उत्पाद – इनकी लकड़ियों से घर और रेशे से कपड़े तैयार होते हैं। कई ईंधन उत्पाद भी पौधों से तैयार किए जा रहे हैं।

वृक्ष का करुण क्रन्दन

कितने प्यार से किसी ने, बरसों पहले बोया था मुझे।
कितना विशाल, कितना घना आज, मैं वृक्ष हो गया हूं।
फूलों-फलों से लदा हरा भरा, मैं वृक्ष हो गया हूं।।1।।
पर यदा कदा यह विचार मन में आता रहा।
क्या मैं भी दूसरे पेड़ों की तरह काटा जाऊंगा।
क्या मैं भी ऐसे ही वीरगति पाऊंगा।।2।।
दूषित हवा लेकर सभी से, स्वच्छ हवा देता रहा हूं।
इतना बड़ा उपकार सभी का, सदा ही मैं करता रहा हूं।
जीवित रहकर ही 'नमन्ति सफला वृक्षाः'
सार्थक कर पाऊंगा।।3।।
कुछ तो दया करो, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।
यही मेरी करूणा भरी पुकार है, यही मेरी गुहार है।
मत काटो मुझे, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।।4।।

मानव की उत्साहपूर्ण घोषणा

करुण क्रन्दन सुन द्रवित हो, मानव बोला-सुनो हमारे गीत।
अब से कभी पेड़ नहीं कटेंगे, बन जाएगी यह नई रीत।
वह दिन अब दूर नहीं, जब हर मानव वृक्ष
बचाने आएगा।।5।।
जंगल अब नहीं घटने पाएगा, पेड़ न कोई
अब कटने पाएगा।
हर मानव इक पेड़ लगाएगा, चैन की सांस तभी ले पाएगा।
पर्यावरण संतुलित तभी होगा, जनजागरण जब
घर-घर हो जाएगा।।6।।
मेरा निश्चय है बस एक यही, पेड़ न कोई कटने पाए।
जनजीवन का है आधार वृक्ष, फिर इसका
तन क्यों मुस्कराए।
मेरी है हुंकार यही-कभी न यह कटने पाए,
प्रियवर कभी न यह कटने पाए।।7।।

श्री वेद प्रकाश शास्त्री

जन्माष्टमी पर कुछ मीठा, कुछ चरपरा

यशोमति Mom से, Talking नंदलाला,
राधा Q Fair, I am Q काला?
बोली Smiling मईया, Listen मेरे लाला,
वो City की item, तू Village का ग्वाला
That's why U काला....।

वृक्ष संरक्षण

शीष कटा, चुप-चुप लेटे हैं।
ये भी धरती के बेटे हैं।।
मानव के ये, हरदम रक्षक
लेकिन मानव, इनका भक्षक।।

पहले इनकी पौध लगाता
पाल पोष कर जवाँ बनाता।
जब छाती हरियाली इन पर
तब खुद ही आरा चलवाता।
ये मूक, बधिर,पंगु,असहाय
बने भाग्य के बस हेठे हैं।
ये भी धरती के बेटे हैं।।

भोजन, पानी और औषजन
ये देते जन-जन को हर क्षण
पर इनका उपकार भूलकर
मानव करता इनका भक्षण।
आपदा प्रकृति की ये सारी
हरे हृदय, सदा समेटे हैं।
ये भी धरती के बेटे हैं।।

कोई तो इनको प्यार करे
ये भी प्राणी, स्वीकार करे।
सन्तान समझ,पालन-पोषण
पुत्र सदृश, अंगीकार करे।
क्यों अंग-अंग काटे इनके?
क्यों इनकी गर्दन रेते है?
ये भी धरती के बेटे हैं।।

.....

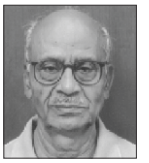

अमर नाथ

राष्ट्र निर्माण हेतु 'भावना' सन्देश

बिना दवाओं के कैसे स्वस्थ रहें तथा दुर्व्यसनों के घातक रोगों से मृत्यु/मुक्ति कैसे?

बीमारियों से एक बार पूछा गया - क्यों बहिनजी! आप मारी-मारी फिरती हैं, चाहे जिस पर हमला कर देती हैं। चाहे जिसको बीमार कर देती हैं। यह क्या बात है।' बीमारियों ने कहा-'जो हमें बुलाता है, हम उसी के पास जाती हैं। मनुष्य अपने असंयम द्वारा हमें हमेशा आवाज देता रहा है तो हम उसी के साथ बनी रहती है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्थापक गायत्री परिवार ने अनुभवों को साक्षी बनाकर विश्वास के साथ कहा कि बीमारियों का इलाज दवाएं नहीं है। समयानुसार औषधियों का न्यूनतम उपयोग तो किया जा सकता है, परन्तु रोगों के उन्मूलन हेतु आहार-विहार एवं आचार-विचार की भूलों को सुधारना होगा, जिसके कारण रोगों की उत्पत्ति होती है।

'आहार-विहार' के सूत्र जो बिना दवाओं के स्वस्थ रखते हैं। भोजन के पूर्व निम्न प्रक्रियाएं अपनायें -

- पालथी लगाकर बैठें। • गायत्री मंत्र को तीन बार बोलें। • जलपात्र साथ में रखें।
- गला एवं भोजन नली के अत्यधिक सूखे होने की स्थिति में जल से 3 बार आचमन करें।

भोजन काल में ध्यान रखें - • भोजन कौर को नियत संख्या (कम से कम 24 बार) में अवश्य चबाएं। • शान्त मन एवं बिना किसी से बात किये भोजन ग्रहण करें। • प्रथम डकार आने तक भोजन समाप्त करने की आदत डालें। • भोजन काल में तथा उसके उपरान्त एक घंटे तक पानी न पियें।

महत्वपूर्ण : • भोजन से पूर्व अधिक प्यास लगने पर जल आधा घंटे पूर्व तक पी सकते हैं।

- रूखा-सूखा भोजन करने के समय, मध्यकाल में दो से ढाई घूंट पानी अवश्य पियें।

आजीवन स्वस्थता हेतु आदत बनाऐं :-

- पूर्वान्ह भोजन सुबह 8.00 से 12.00 बजे तक एवं सायंकालीन भोजन रात्रि के 8.00 बजे से पूर्व करने की।
- दोनों भोजनों के बीच बिना प्यास के भी 8 से 12 गिलास तक स्वच्छ एवं शीतल जल (फ्रिज का नहीं) पीने की।
- पानी खड़े होकर न पीने एवं बैठकर घूंट-घूंट पीने की।
- अत्यधिक मिर्च मसाले युक्त, गरिष्ठ तथा मांसाहारी भोजन न करने की।
- चोकरयुक्त आटा एवं 'अनपॉलिश्ड' चावल भोजन में प्रयोग करने की।
- ऋतु अनुरूप हरी साग-भाजी एवं फलों का सेवन करने की।
- कई प्रकार के भोजन एक साथ न करने की।
- हर समय कुछ न कुछ खाते रहने से बचने की।
- देर रात तक न जगने तथा सूर्योदय से पूर्व मल त्याग करने की।
- दक्षिण दिशा में सिर रखकर सोने तथा बांयी करवट से उठने की।
- शौच से पूर्व बिना कुल्ला किये पानी (एक लीटर तक) पीने की।
- दंत मंजन में मसूढ़ों की मालिश बीच की उंगली से करने की।
- प्राणायाम, व्यायाम करने तथा टहलने की।
- स्नान के समय पानी से पहिले पैर धोयें, हाथों तथा पेट की पानी से मालिश कर, कंधों फिर सिर से पानी डालकर प्रतिदिन नहाने की।
- नहाते समय ऐड़ियों की मालिश अंगूठे से करने की।

वातावरण शुद्धि के लिए आवश्यक है :

• घर एवं नालियों की सफाई रखने की। • घर में बने शौचालय का प्रयोग करने की। • तुलसी का पौधा, घर में गमलों में

लगाने की। • पार्कों में पीपल तथा नीम के पौधे लगाने की।

दुर्व्यसनों से घात रोग, मृत्यु एवं मुक्ति कैसे? वर्तमान में सस्ते नशे के प्रचलित दुर्व्यसन यथा तम्बाकू, देशी शराब 'ठर्रा' का सेवन अधिकांशतः मजदूर, गरीब किसान, लोपेड कर्मचारी तथा युवा वर्ग आदि में है। इनके नशे से व्यभिचार, अशिष्टता एवं अनीति विकसित होती है। चरित्र के साथ नपुंसकता आती है।

तम्बाकू सेवन-पान मसाला, गुटखा, बीड़ी-सिगरेट द्वारा गुटखा : इसके निर्माण में तम्बाकू के साथ इलाचयी, लौंग आदि की सुगंध केमिकल्स के रूप में, सड़ी सुपाड़ी, कत्थे के स्थान पर गैम्बियर पेंट तथा इसकी लत हेतु घृणित मृत अखाद्य पदार्थ पीस कर मिलाये जाते हैं। इसके सेवन से कैंसर के फलस्वरूप मुंह खुलना बंद, दांतों की दुर्दशा, जिह्वा का जलना, गाल का गलना आरम्भ होता है। कैंसर का लाइलाज होने पर मृत्यु निश्चित तथा सम्बन्धित एवं आश्रित परिवार के सदस्यों को रोते नहीं बनता।

बीड़ी-सिगरेट : बीड़ी-सिगरेट के धुयें में 40 मुख्य जहरों में कैंसर एवं तपेदित जनक, निकोटिन एवं कार्बन मोनो आक्साइड जहर विशेष है। निकोटिन से फेफड़ों का झुलसना तथा अमाशय में अल्सर होना निश्चित है। कार्बन मोनो आक्साइड से आंखों से देखने में सहायक 'रेटीना' खराब होने से अंधापन आता है। इसके अतिरिक्त यह गैस तरल रूप में तारकोल में होती है और सड़क पर डाली गई मिट्टी को जोड़ देती है। ऐसे ही यह गैस फेफड़ों में श्वास लेने के छिद्रों को बन्द सड़क जैसा कड़ा कर देती है। फलस्वरूप श्वास लेने में कठिनाई से दमा तथा खांसी में खून आने से टी.बी. (तपेदिक) या फेफड़ों का कैंसर हो जाता है। यह धुआं, पीने वाले को उपरोक्त लाइलाज बीमारियों से ग्रस्त तो करती है, साथ ही साथ धुएं के सम्पर्क में अन्य को भी।

शराब : शराब देशी हो विदेशी, दोनों में नशा देने वाला मुख्य जहर मिथाइल अल्कोहल है। इसकी मात्रा भिन्न-भिन्न शराबों में भिन्न-भिन्न होती है। देशी शराब या 'ठर्रा' का उत्पादन चोरी से अल्प समय में बहुत ही गन्दे तरीके से किया जाता है। शीरे को अन्य जहरीले केमिकल्स के साथ घड़ों में भरकर जमीन में गाड़ दिया जाता है। इसे शीघ्रता से सड़ाने हेतु, सड़े अंडे, सड़ी सब्जियां, मरे मेढक, तिलचट्टे आदि मिला दिये जाते हैं। एक माह में तैयार कच्चे माल को भट्टियों में चढ़ाकर आसवन विधि से अवैध रूप से ठर्रा तैयार किया जाता है। इसमें जहर (मिथाइल एल्कोहल) की मात्र नियंत्रित नहीं है। इसे रंगीन करने हेतु पेन्ट में प्रयोग होने वाले लिक्विड आदि मिलाने से 'ठर्रा' और जहरीला हो जाता है। इस ठर्रे के पीने से लीवर सबसे अधिक प्रभावित होता है। लीवर सिरोसिस (जलोदर) रोग से मृत्यु निश्चित है। कभी-कभी पेट में जहर की मात्रा अधिक होने पर रक्त नलियां सूज जाती हैं, फट जाती हैं तथा खून की उल्टी के साथ-साथ कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है।

सुझाव : भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना) द्वारा राष्ट्र निर्माण में निम्न सुझाव प्रार्थनीय हैं :

1. बिना दवाओं के स्वस्थ कैसे रहें, के व्यवहारिक सूत्रों का पालन करके अनुभव करें।

2. गुटखा मसाला का खाना, बीड़ी-सिगरेट तथा 'ठर्रा' व शराब पीने के दुष्परिणाम लाइलाज बीमारी के रूप में अल्प अवधि में मृत्यु निश्चित कर देते हैं। इसका सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है। व्यक्तिगत क्षति या शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक के साथ जन-विश्वास खोने की अपूर्णनीय क्षति होती है। दुर्व्यसनों से मुक्ति पाने में ही स्वयं की, परिवार की, समाज की एवं राष्ट्र की भलाई है।

शुभ कामनायें

जुलाई-अगस्त-सितम्बर 2018 में बहुत से पर्व एवं त्यौहार आये। स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, इदुल अज्हा, गुरु पूर्णिमा, गणेश चतुर्थी, शिक्षक दिवस एवं पर्यूषण पर्व, विश्वकर्मा जयन्ती, गणेश चतुर्थी आदि।

इन पर्व एवं त्यौहारों के लिए भावना परिवार की ओर से सभी सदस्यों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें।

– भावना परिवार

बिना भूख के कभी मत खाना लाख स्वादिष्ट पकवान

स्व. इं. धर्मवीर सिंह
पूर्व प्रधान संपादक, भावना-संदेश

मनुष्य की स्वास्थ्य समस्याएं, बीमारियां एवं अन्य शारीरिक कष्ट उसके कर्म फल होते हैं, जिन्हें वह कुदरत एवं भाग्य की देन मानता रहता है। वास्तव में जिस प्रकार मनुष्य लक्ष्यहीन जीवन जीने से कष्ट उठाता है, उसी प्रकार बिना भूख के खाने पर भी उसे बहुत से रोग हो जाते हैं। अतः मनुष्य को संयम नियम के साथ प्राकृतिक दिनचर्या से जो लाभ मिलता है वह केवल अनुशासन से ही जीने पर मिल सकता है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए तो उपरोक्त कथन का पालन करना अतिआवश्यक है अन्यथा उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता। बुजुर्गों को दवा से अधिक उपवास में मिलता है।

सर्वप्रथम विचार करना है कि मनुष्य बिना भूख के भी क्यों खाता-पिता रहता है? सीधा सा उत्तर है कि मनुष्य को बुरी आदतें, जिह्वा रस की गुलामी एवं मशीनी-जीवन के कारण ऐसा होता है। जवानी में तो मनुष्य को इस आदत से इतना कष्ट नहीं होता परन्तु उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह इस आदत के कारण बहुत से रोग पकड़ लेता है। इसलिए बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि सप्ताह में एक दिन उपवास करने से मनुय का हाजमा सही रहता है।

प्राकृतिक चिकित्सा के पक्षधर भोजन में संयम नियम न बरतने के कारण निम्न रोगों का होना अवश्यम्भावी बताते हैं।

- भोजन अशांत मन व जल्दी जल्दी करने पर एसिडिटी, गैस बनना, कब्ज एवं मधुमेह आदि रोग हो जाते हैं।
- बिना चबाये भोजन करने पर - कब्ज, अपचता, बवासीर, थकान, लो ब्लड प्रेशर एवं प्रेशर लगने पर मलमूत्र न रोकने की क्षमता बन जाती है।
- भोजन के साथ-साथ अधिक पानी पीने पर :- भूख मर जाती है, चक्कर आने लगते हैं, कमजोरी अनुभव होती है, खट्टी डकार आती है। कुछ कमजोर लोगों को अस्थमा तक हो जाता है। उल्टी दस्त एवं आलस्य का प्रकोप हो जाता है।
- अधिक खाने पर - मोटापा, उल्टी, दस्त, पेट दर्द,, बुखार, हृदय रोग, लीवर के रोग तथा प्रतिरोधक क्षमता कम होती है।
- असंतुलित एवं फास्ट फूड एवं बासी भोजन खाने पर - मोटापा, कैंसर, उल्टी दस्त, पेट दर्द आदि समस्याएं उत्पन्न होती है।
- तला भुना घी तेल अधिक एवं मांस मछली युक्त भोजन करने पर - कब्ज, बवासीर, गैस बनना, सिर दर्द, उच्च रक्त चाप तथा अनिद्रा रोग हो जाता है।
- शराब, कोल्ड ड्रिंक एवं घुट-घुट कर खाने की आदत से - अल्सर, कमजोर हाजमा, कब्ज, टी.बी., मोटापा, लीवर सिरोसिस एवं स्मरण शक्ति का ह्रास होता है।
- देर रात्रि में भोजन करने पर - अपच, नींद न आना, बेचैनी, सिर दर्द, खांसी एवं कमर दर्द की शिकायत हो जाना
- श्रमहीन जीवन एवं खूब डट के खाने पर - मोटापा, शरीर पर चर्बी चढ़ जाती है, गैस बनती है, पैर अकड़ जाते हैं, बार-बार पेशाब आता है, निंद्रा भंग और आलसीपन पनपता है।

इसी प्रकार बिना भूख के भोजन करने पर भी मनुष्य बहुत से रोग स्वयं पाल लेता है और अपच, कब्ज, खट्टी डकार एवं एसिडिटी, उल्टी-दस्त एवं बेचैनी आदि समस्याओं से नहीं बच पाता है।

वरिष्ठ नागरिकों को यह आदत शीघ्रातिशीघ्र छोड़ देनी चाहिए अन्यथा उनको असाध्य रोग हो जाते हैं। आजकल मधुमेह रोग का प्रकोप संयम-नियमहीन दिनचर्या के कारण है। समाज में भी विभिन्न अवसरों पर कई बार मनुष्य अपनी इस आदत के कारण शर्मिंदगी उठाता है क्योंकि प्रथम उत्तर हेाता है कि भूख नहीं है परन्तु फिर दूसरों के आग्रह करने पर मना भी नहीं करता और उसकी स्थिति बच्चों के समान हो जाती है। उसकी नैतिक क्षमता भी क्षीण हो जाती है।

कुछ लोग तो खाते समय आवाज के साथ गैस-पास करते रहते हैं, डकार लेते रहते हैं और अपने को असभ्यता का उदाहरण बना देते हैं। वास्तव में बिना भूख के खाने वालों का आत्म-नियंत्रण इतना कमजोर हो जाता है कि वह स्वयं अपनी नजरों से गिर जाते हैं। इस आदत के कारण बच्चे-बूढ़े एक समान कहे जाते हैं, परन्तु बच्चे तो चहकते रहते हैं परन्तु बूढ़े रोगी बन जाते हैं।

अतः सेवानिवृत्ति हो जाने के बाद केवल एक वक्त भोजन करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है तथा सप्ताह में एक दिन उपवास भी रखना चाहिए। बुजुर्गों के लिए Two-'w' अर्थात Walk & way का प्रयोग उन्हें स्वस्थ रखता है।

स्वस्थ जीवन

स्वस्थ जीवन से अभिप्राय है कि हमारा जीवन चिन्ता, मानसिक तनाव, दुःख, रोगों से रहित हो, शरीर देदीप्यमान हो तथा युवा शक्ति से परिपूरित हो। हमारा अपनी निम्न इच्छाओं, भावनाओं, विचारों पर नियंत्रण हो तथा जीवन दायनि प्राण शक्ति को संचालन करने की कला हमें आती हो। हमारा चिन्तन, कर्म तथा व्यवहार अहंकार तथा स्वार्थ से रहित हो, हम परमात्मा के लिए कुशलतापूर्वक कर्म करते हुए जीवन जियें। हमारा लक्ष्य है कि प्रत्येक व्यक्ति दिव्य प्रेम का जीवित विग्रह हो, सर्वत्र प्रेम की गंगा प्रवाहित हो। ऐसा होना पूरी तरह संभव है। वैदिक काल में भारतवासी इसी प्रकार का जीवन जीते थे। अब समय आ गया है कि हम दिव्यता को पुनजीर्वित करें अन्यथा जीवन भौतिक प्रगति की सुविधाओं के होते हुए भी सम्पूर्णतः अभिशाप बन कर रह जायेगा। जीवन में दिव्यता लाने के लिये हमें अध्यात्मवाद से परिचित होना आवश्यक है।

परमात्मा अनन्त है, समस्त जगत उसी से उत्पन्न होता है, उसी में जीवन लीला करता है तथा उसी में विलीन होकर पुनः पुनः उत्पन्न होता है। मनुष्य परमात्मा का अंश है, उसमें परमात्मा की परम शान्ति, आनन्द, असीम शक्ति, गुण, ज्ञान, प्रेम एकता, सौन्दर्य, माधुर्य आदि गुप्त रूप से छिपे पड़े हैं। परमात्मा से अपने आपको युक्त करके इन दिव्य गुणों तथा शक्तियों को अपने भीतर धारण करके **दिव्य-जीवन** जीकर मनुष्य सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है। परमात्मा से युक्त होने पर अहंकार तथा स्वार्थ विदा हो जाते हैं। मनुष्य का काम, क्रोध, मोह लोभ आदि पर नियंत्रण हो जाता है तथा वह प्रेम का जीवित विग्रह बन जाता है। ऐसा **जीवन-दिव्य** जीवन कहलाता है। जीवन में प्रेम के फूल विकसित होते हैं, जिनकी सुगन्ध से मानवता का कल्याण होता है तथा अन्य व्यक्तियों को भी दिव्य-जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। ऐसा मनुष्य सदा रोगों से मुक्त होकर युवा रहता है, उसे बुढ़ापा आता ही नहीं तथा उसमें इच्छानुसार आयु दीर्घ करने की योग्यता आ जाती है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु अनुभूत ध्यान की विधियां प्रस्तुत की जा जा रही हैं।

1. आंखें धीरे से मूँद लें, परमात्मा से प्रार्थना करें, कि आपका जीवन दिव्य हो, कुछ समय के उपरान्त परमात्मा से प्रार्थना करें कि आपको स्थिर शान्ति प्रदान करें। आराम से प्रतीक्षा करो, दस मिनट में आपका सारा शरीर सिर से पांव तक शान्ति की स्थिर प्रतिमा बन जायेगी, यदि मन में विचार उठे तो उनको आदेश दें कि वे थम जायें, ऐसा करने से विचार रूक जायेंगे। कुछ दिनों के अभ्यास से आपका मन पूरी तरह शान्त हो जायेगा। व्यावहारिक काल में जब मन अशान्त हो तो यही अभ्यास करें। इस प्रकार आप के भीतर गहन तथा स्थिर शान्ति स्थित हो जायेगी। आप बहुत हल्का-फुल्का महसूस करेंगे जब भी समय मिले, शान्ति का अभ्यास करें। मन को परम शान्ति की चित्रवृत्ति निरोध या समता कहते हैं।

2. जब मन शान्त हो जाये तो परमात्मा से दिव्य शक्ति के लिये प्रार्थना करें, आपके शरीर में दस मिनट में असीम ऊर्जा आ जायेगी। आप कभी काम करते थकेंगे नहीं तथा शक्ति से परिपूति होंगे।

3. शान्ति तथा शक्ति के अभ्यास के उपरान्त प्रकाश का ध्यान करें। परमात्मा से प्रार्थना करें कि आपको दिव्य प्रकाश प्रदान करें। आपकी विभिन्न प्रकार के प्रकाशों का अनुभव होगा। प्रकाश के द्वारा आपके सभी प्रकार के विचारों की शुद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जायगी।। आपके शरीर में दिव्य तेज की चमक आ जायेगी।

4. शान्ति, शक्ति प्रकाश के ध्यान के उपरान्त बिन्दु का ध्यान करें। पिन की नोक के साईज के बिन्दु की अपने माथे के मध्य से कल्पना करें। कुछ दिनों के अभ्यास से बिन्दुकी स्थिति दृढ़ हो जायेगी। उसके उपरान्त बिन्दु को सूक्ष्म अति सूक्ष्म करते जायें। असीम दिव्य ऊर्जा उत्पन्न होगी तथा आध्यात्मिक अनुभव होंगे। इस प्रयोग से आपके शरीर की कोशिकायें पुनर्जीवित हो जायेगी, आप कभी बीमार एवं बूढ़े नहीं होंगे तथा आप में इच्छानुसार जीवन को दीर्घ करने की क्षमता आ जायेगी। किसी भी स्थिति में मृत्यु की इच्छा नहीं करनी है तथा उससे डरना नहीं है।

5. सदा शान्त रहें, कम से कम सार्थक वचन बोलें, अधिक सुनने की कला अपनायें, मन की बोलने की प्रवृत्ति पर संयम रखें, दोष दृष्टि को त्यागें, समस्याओं का उत्साहपूर्वक मुकाबला करें, सत्य का पालन करें। संतुलित भोजन सीमित मात्रा में लें।

उपरोक्त ध्यान की विधियों के प्रयोग से तथा नियमों के पालन से आप स्वस्थ जीवन जियें तथा अन्य व्यक्तियों के लिये प्रेरणा स्रोत बनें।

श्रीकृष्ण गोयल, 307-बी, पाकेट-2, मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली-110091

युवा भारत में क्या कठिन हो रही है बुजुर्गों की डगर?

युवा भारत में बुजुर्ग होना बिल्कुल आसान नहीं रह गया है। शारीरिक रूप से कमजोर, वित्तीय तौर पर गरीब, भावनात्मक स्तर पर टूटे हुए, सामाजिक तौर पर दरकिनार और तकनीकी रूप से अशक्त बुजुर्गों की ओर आसानी से किसी का ध्यान नहीं जाता। 13 करोड़ की आबादी होने के बावजूद ये किसी राजनीतिक दल की फेहरिस्त में भी नहीं शामिल किए जाते। युवाओं से भरे देश में उम्मीद, चिंताएं, विकास की बातें और ऊंची आकांक्षाएं युवाओं पर ही केंद्रित हैं। चाहे बात कंज्यूमर गुड्स की खपत की हो या सरकार की नीति निर्धारण की, अमूमन हर मुद्दे पर राष्ट्रीय सोच युवाओं से ही प्रभावित है। ऐसे में युवाओं और उम्रदराज लोगों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। इसमें डिजिटल विभाजन, दरकता सामाजिक ताना-बाना, वर्क प्लेस पर उम्र को लेकर पूर्वाग्रह और वर्क एक्सपीरिएंस की बजाय उम्र को तरजीह देने के ट्रेंड, बढ़ता स्वास्थ्य खर्च, पेंशन कवरेज की सीमितता तमाम ऐसे कारक हैं, जो बुजुर्गों को हाशिए पर धकेलते जा रहे हैं।

सामाजिक सुरक्षा कहां पिछड़ी : सामाजिक तौर पर बुजुर्गों के लिए दौर बेहद कठिन है। विशेषज्ञों का कहना है कि एक विकासशील देश में जहां लाखों लोग गरीब हैं, भारत अपने वरिष्ठ नागरिकों के लिए उदार सामाजिक सुरक्षा का बोझ नहीं उठा सकता। संयुक्त परिवार व्यवस्था में बुजुर्गों की देखभाल हो जाती थी। लेकिन अब टूटते सामाजिक ताने-बाने, नौकरी के लिए शहर बदलने की मजबूरी, एकल परिवार और आत्मकेंद्रित समाज के चलते बड़े-बुजुर्गों को साथ रखना कठिन हो रहा है।

एजवेल फाउंडेशन की पिछले साल की रिपोर्ट बताती है कि भारत में हर दो में से एक वरिष्ठ नागरिक अकेलेपन से संघर्ष कर रहा है। एजवेल फाउंडेशन की रिपोर्ट कहती है कि 37% बुजुर्गों की शिकायत है कि उनके पैसे पर परिवार के सदस्यों का कब्जा हो गया है। वहीं 78% लोग मानते हैं कि सोशल मीडिया की वजह से वे परिवार के साथ कम समय गुजारते हैं।

महिलाओं की दशा और बदतर : वरिष्ठ नागरिकों की जमात में महिलाएं की दशा पुरुषों से कहीं ज्यादा खराब है। 13 करोड़ बुजुर्गों में 63 फीसदी महिलाएं हैं। उम्र बढ़ने के साथ यह स्थिति और गंभीर हो जाती है, जैसे 80 साल की आयु वर्ग में प्रति 1000 पुरुषों पर 1800 महिलाएं हैं। ज्यादातर महिलाओं को बेजुबान रहकर जीवन गुजारना पड़ता है, जो उन पर भारी पड़ता है।

आंकड़ों की नजर से : भारत में 65 फीसदी आबादी 35 साल से कम उम्र के युवाओं की है, जबकि 10 फीसदी यानी 13 करोड़ सीनियर सिटिजंस हैं। आंकड़ों के आधार पर ये संख्या राष्ट्रीय स्तर पर असरदार साबित नहीं होती। यहां तक कि वोट बैंक में छठवां हिस्सा बुजुर्गों का है लेकिन इसके बावजूद राजनीतिक दल उनको तवज्जो नहीं देते। यही वजह है कि बुजुर्गों से संबंधित घोषणाएं पार्टी मेनिफेस्टो या राष्ट्रीय नीतियों से गायब रहती हैं। चीन के बाद भारत बुजुर्ग आबादी के मामले में दूसरे नंबर पर है। 2050 तक यह आंकड़ा 30 करोड़ हो जाएगा।

सच्चाई का कड़वा घूंट :- सीनियर सिटिजंस अपनी जगह समाज और वर्क प्लेस, दोनों से गंवाते जा रहे हैं। एक तरफ जहां जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है (1964 में 45.11 साल से 2015 में 68.35 साल और 2050 तक 75.9 साल हो चुकी है) वहीं जॉब मार्केट में सीनियर एग्जेक्यूटिव की उम्र घटती जा रही है। फ्यूचर ब्रैंड्स के संतोष देसाई कहते हैं, 35 साल की उम्र के लोग कंपनियां चला रहे हैं। ज्यादातर चीजें तकनीकी रूप से सक्रिय युवाओं की तरफ झुकती जा रही हैं। तकनीक को लेकर सजग न रहने के कारण भी बुजुर्ग पिछड़ रहे हैं। एनबीटी-6.9.2018

रिटायरमेंट अब हौव्वा नहीं...जिंदगी पार्ट-2 का न्योता

वक्त था जब रिटायरमेंट के नाम से लोग घबराते थे, लेकिन एक सर्वे का दावा है कि भारत में अब तस्वीर बदल रही है। एचएसबीसी की **'फ्यूचर ऑफ रिटायरमेंट : ब्रिजिंग द गैप'** रिपोर्ट के मुताबिक, अब 54% कामकाजी भारतीय चाहते हैं कि कम उम्र में रिटायरमेंट ले लिया जाए। बाकी उम्र में नियमित नौकरी के बजाए बीच-बीच में काम किया जाए या कोई ऐसा काम किया जाए जिसमें कुछ घंटे ही देने पड़ें। बाकी दुनिया में ऐसा चाहने वाले 56% हैं। सर्वे कहता है कि लोग अब रिटायरमेंट से डरते नहीं हैं। उनके लिए यह खुद को समय देने का मौका है। एचएसबीसी के लिए इप्सॉस ने यह सर्वे ऑनलाइन किया है। इस सर्वे में यह भी सामने आया है कि नई पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी के लिए पैसा-प्रॉपर्टी कमाकर

रखने में यकीन नहीं करती। यह चाहती है कि अगली पीढ़ी अपने लिए खुद सम्पत्ति कमाए। इसके अलावा, भारत समेत दुनिया भर में सिर्फ 33 प्रतिशत लोगों ने रिटायरमेंट के लिए नियमित तौर पर बचत की है।

22% भारतीयों का मानना है कि अगली पीढ़ी अपने लिए सम्पत्ति का निर्माण खुद करें।

13% लोग ऐसे हैं जो अगली पीढ़ी के लिए ज्यादा से ज्यादा सम्पत्ति बचाकर रखना चाहते हैं।

50% लोग केवल कम समय की बचत के लक्ष्य निर्धारित कर चल रहे हैं। 45% लोगों ने माना कि वे भविष्य के लिए बचत करने के बजाए वर्तमान में कमाने-खर्च करने को तरजीह देते हैं। 19% लोग ही इलाज या होम केयर के लिए बचत कर रहे हैं।

एनबीटी-10.9.2018

बुजुर्ग समाचार

1. कन्नौज (उ.प्र.) निवासी श्री विष्णु स्वरूप सक्सेना जी का जन्म 1940 में हुआ था। इंडियन पोस्टल सर्विस से रिटायर होने के बाद उन्होंने अपनी पढ़ाई फिर से चालू की और 78 वर्ष की आयु में जे.एन.यू. से पी.एचडी. की डिग्री प्राप्त की।

2. बलिया (उ.प्र.) के शिवरामपुर के मूल निवासी श्री सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय ने 28 विषयों में 12 बार इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की है, वैसे वो 1973 में ही ग्रेजुएट बन चुके थे लेकिन हर विषय में इण्टरमीडिएट करने की धुन उन्हें अब भी सवार है।

मिलावट की जाँच खुद करें

दूध : थोड़े से दूध में शोरिक अम्ल की दो तीन बूंदें डाल दें। यदि दूध में पानी मिला होगा तो दूध और पानी अलग अलग हो जायेगा। लेक्टो मीटर से मापने पर शुद्ध दूध का गुरुत्व 1.030 से 1.034 तक होता है।

देशी घी : एक चम्मच चीनी को 10 सी.सी. हाइड्रोक्लोरिक अम्ल में मिलाकर उसके घोल में 10 सी.सी. पिघला हुआ घी डाल दें। यदि घी मिलावटी है तो 10 मिनट बाद घोल की सतह पर लाल रंग दिखायी देने लगेगा।

मक्खन : मक्खन को गर्म करने पर यदि शुरू से ही उसमें झाग उठने लगे तो वह असली होगा अन्यथा मिलावटी।

चाय की पत्ती : सफेद गीले कागज पर थोड़ी सी चाय की पत्ती रखने से यदि कागज पर भूले गुलाबी या लाल रंग के धब्बे पड़ जायें तो पत्ती में मिलावट है।

शहद : पानी से भरे हुए गिलास में एक बूंद शहद टपका दें। यदि वह सीधे गिलास की पेंदी में बैठ जाये तो शहद असली है तथा पानी में घुल जाने पर उसे नकली ही समझें।

हल्दी : एक चम्मच पिसी हल्दी को थोड़े से पानी में मिलाकर उसमें दो चार बूंदें आयोडीन डाल दें। यदि नीला रंग हो जाय तो हल्दी मिलावटी है।

काली मिर्च : इसमें प्रायः पपीते के बीजों की मिलावट की जाती है। जांच के लिए थोड़ी सी काली मिर्च पानी में डाल दें। पपीते के बीज स्वतः पानी पर तैरने लगेंगे।

हींग : शुद्ध हींग पानी में डालने पर पानी सफेद हो जाता है। मिलावटी हींग से पानी सफेद नहीं होगा।

वामांगी (अक्टू. 2017) से साभार

शोक संदेश

भावना की सक्रिय सदस्य, AISCCON द्वारा वर्ष 2013 का Best Senior Citizen (Female) Award प्राप्त करने वाली श्रीमती मंजुश्री त्रिवेदी जी की 94 वर्षीया माताजी का देहावसान 21.09.2018 को हो गया है। ईश्वर मृतक की आत्मा की शान्ति प्रदान करे।

भावना-परिवार

मौके खोजे नहीं, पैदा किए जाते हैं!

डॉ. जगदीश गाँधी,
शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

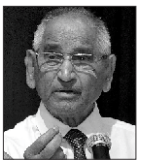

(1) मौके खोजे नहीं, पैदा किए जाते हैं :- देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी का कहना था कि इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं। इसलिए हमें मौकों का इंतजार करने की बजाय वर्तमान हालात में ही अपने लिए मौके खोजने चाहिए। हर इंसान में किसी न किसी तरह की रचनात्मकता जरूर होती है। इसलिए हमें लगातार अपनी रचनात्मकता को निखारने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि हम अपने जीवन में और भी बेहतर कर सकें। क्रिएटिव वह है, जो केवल स्वप्न ही नहीं देखता बल्कि उन स्वप्नों को साकार करने के लिए काम करता है। क्रिएटिव वह है, जो अंधेरों में भी कूदने का साहस रखता है। क्रिएटिव वह है, जो चुनौतियों को स्वीकारने में तत्पर रहता है।

(2) हमें समस्याओं से लड़ना और उनसे जीतना आना चाहिए :- सबसे बड़ा रचनाकार परमात्मा हमारी आत्मा का पिता है। हम ब्रह्माण्ड के उस महान रचनाकार के पुत्र है। कोई ऐसा काम करें, जिसे आप हमेशा से करना चाहते थे। नए विषयों का अध्ययन करें और नए विचारों की जाँच करें। देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी कहा करते थे कि हमारे अंदर अलग सोच रखने का साहस, नये रास्तों पर चलने का साहस, आविष्कार करने का साहस होना चाहिए। हमें समस्याओं से लड़ना और उनसे जीतना आना चाहिए। ये सभी महान गुण हैं जिन्हें हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

(3) सीखने की कोई उम्र नहीं होती :- रोमन देशभक्त मार्कस पोर्सियस केटो ने अस्सी साल की उम्र में ग्रीक भाषा सीखी। महान जर्मन-अमेरिकन कलाकार मैडम अर्नेस्टाइन शूमैन-हेंक दादी बनने के बाद अपनी संगीत सफलता के शिखर पर पहुँची। यूनानी दार्शनिक सुकरात ने वाद्ययंत्र बजाना तब सीखा, जब वे अस्सी साल के थे। माइकलएंजेलो अस्सी साल की उम्र में अपने सबसे महान कैनवास पर पेटिंग कर रहे थे। अस्सी साल की उम्र में सियोस सायमनाइडस ने कविता का पुरस्कार जीता, और लियोपॉल्ड वॉन रैंके ने अपनी हिस्ट्री आफ द वर्ल्ड शुरू की, जिसे उन्होंने बानवे साल की उम्र में पूरा किया। अठासी साल की उम्र में जॉन वेस्ली मेथोडिज्म पर भाषण दे रहे थे और मार्गदर्शन दे रहे थे।

(4) जीवन की अंतिम सांस तक जीने का उत्साह बना रहना चाहिए :- एक सौ दसवें जन्मदिन पर कैलमेंट को दुनिया भर से बधाइयाँ और शुभकामनाएँ मिली। एक सौ अठाहरवें जन्मदिन ने उन्हें इतिहास में सबसे अधिक उम्र का व्यक्ति बना दिया। जब उनसे पूछा गया कि यह कैसे सभंव हुआ? तो वे बोलीं, ''मैंने अपने जीवन के हर मौके का सदुपयोग किया।'' एक सौ बाईस साल की होने पर भी उनकी ललक, उत्साह व सकारात्मकता हमेशा की तरह मंत्रमुग्ध करने वाली थी।

(5) हमारे प्रत्येक कार्य-व्यवसाय परमात्मा की सुन्दर प्रार्थना बने :- शीर्षस्थ हार्ट सर्जन माइकल डेबेकी ने खून का पहला रोलर पंप 1932 में ईजाद किया था। उनका बनाया पंप आज भी बाइपास सर्जरी में प्रयुक्त होता है। नब्बे साल की उम्र में डॉक्टर डेबेकी को एक नए आविष्कार पर प्रयोग शुरू करने की अनुमति मिली। यह एक छोटा पंप था, जिसे गंभीर हृदय रोगियों के सीने में लगाया जा सकता था। डेबेकी सिर्फ शोध से ही संतुष्ट नहीं थे। वे सर्जरी भी करते रहे। उनके बारे में एक सहयोगी ने कहा था, ''उन्होंने जितना किया है, उतना करने के लिये बाकी लोगों को पाँच-छह जन्म लेने पड़ेगे।'' डेबेकी ने नब्बे साल की उम्र में अपने जीवनदर्शन का सार इस तरह से व्यक्त किया था, ''जब तक आपके सामने चुनौतियाँ हैं और आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम हैं, तब तक जीवन रोमांचक और स्फूर्तिवान है।

भगवान श्रीकृष्ण

पहले श्रीकृष्ण जी के बारे में जाने फिर जन्माष्टमी की शुभकामना दें।

वर्तमान हुंडाप्सर्पिणी काल के अंतिम वासुदेव, 22वें तीर्थकर श्री नेमिनाथ के चचेरे भाई, सोलह कारण भावना में से 9वीं भावना वैय्यावृत्तिकरण का पालन कर तीर्थकर नाम प्रकृति का बंध कर आगामी चौबीसी में भरत क्षेत्र से होने वाले 16वें तीर्थकर वासुदेव श्रीकृष्ण के जन्मदिवस पर सभी साधर्मीजन को बधाइयाँ। (जैन धर्म)

भगवान श्रीकृष्ण को अलग अलग स्थानों में अलग अलग नामों से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में श्रीकृष्ण, गोपाल, गोविन्द इत्यादि नामों से जानते हैं। राजस्थान में श्री नाथजी या ठाकुरजी के नाम से जानते हैं। महाराष्ट्र में बिट्ठल के नामसे भगवान जाने जाते हैं। उड़ीसा में जगन्नाथ के नाम से जाने जाते हैं। गुजरात में द्वारिकाधीश के नाम से जाने जाते हैं। असम, त्रिपुरा, नेपाल इत्यादि पूर्वोत्तर क्षेत्रों में कृष्ण नाम से ही पूजा होती है। मलेशिया, इंडोनेशिया, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस इत्यादि देशों में कृष्ण नाम ही विख्यात है। गोविन्द या गोपाल में 'गो' शब्द का अर्थ गाय एवं इंद्रियों, दोनों से है। गो एक संस्कृत शब्द है और ऋग्वेद में **'गो'** का अर्थ होता है मनुष्य की इंद्रियां.. जो इंद्रियों का विजेता हो जिसके वश में इंद्रियां हो वहीं गोविंद है गोपाल है।

श्रीकृष्ण का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद के राजा कंस की जेल में हुआ था। श्रीकृष्ण के पिता का नाम वसुदेव था जो यदुवंशी थे। इसलिए इन्हें आजीवन 'वासुदेव' के नाम से जाना गया। यह यदुवंश राजा यदु के नाम पर चला था जो राजा ययाति और देवयानी के पुत्र थे। श्रीकृष्ण के दादा का नाम शूरसेन था। श्रीकृष्ण का नामकरण महर्षि गर्ग ने किया था। श्रीकृष्ण के भाई बलराम थे लेकिन उद्धव और अंगिरस उनके चचेरे भाई थे। अंगिरस ने बाद में तपस्या की थी और जैन धर्म के तीर्थकर नेमिनाथ के नाम से विख्यात हुए थे। श्रीकृष्ण के धनुष का नाम शाड्र्ग, शंख का नाम पांचजन्य, तलवार का नाम नन्दक, चक्र का नाम सुदर्शन (वज्रनाभ) था। उनके सारथि का नाम दारुक था और उनके रथ में चार घोड़े जुते होते थे। बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण ने सिर्फ एक बार नदी में नग्न स्नान कर रही स्त्रियों के वस्त्र चुराकर उन्हें अगली बार इस प्रकार खुले में नग्न स्नान न करने की नसीहत दी थी।

श्रीकृष्ण की वैसे तो आठ मुख्य रानियां थीं। रूक्मिणी, सत्यभामा, जांबुमती, सुशीला, लक्ष्मणा, मित्रवृन्दा, नाग्नजिति, भद्रा। लेकिन मूल पटरानी एक ही थी जिनका नाम रूक्मणी था, जो महाराष्ट्र के विदर्भ राज्य के राजा रूक्मी की बहन थी। रूक्मी शिशुपाल का मित्र और श्रीकृष्ण का शत्रु था। श्रीकृष्ण ने 16000 राजकुमारियों को असम के नरकासुर की कारागार से मुक्त कराया था और उन राजकुमारियों को आत्महत्या से रोकने के लिए मजबूरी में उनके सम्मान हेतु उनसे विवाह किया था क्योंकि उस युग में हरण की स्त्री अछूत समझी जाती थी और समाज उन स्त्रियों को अपनाता नहीं था। उनकी प्रेमिका का नाम राधारानी था जो बरसाना के सरपंच वृषभानु की बेटी थी। श्रीकृष्ण राधारानी से निष्काम और निःस्वार्थ प्रेम करते थे। राधारानी श्रीकृष्ण से उम्र में बहुत बड़ी थी। लगभग 6 साल से भी ज्यादा का अंतर था। श्रीकृष्ण ने 14 वर्ष की उम्र में वृन्दावन छोड़ दिया था और उसके बाद वे राधा से कभी नहीं मिले। दुर्योधन श्रीकृष्ण का समधी था और उसकी बेटी लक्ष्मणा का विवाह श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब के साथ हुआ था। श्रीकृष्ण के कुलगुरु महर्षि शांडिल्य थे जिनसे उन्होंने अध्यात्म की शिक्षा ली, लेकिन युद्ध, राजनीति और मल्ल कला सीखने के लिए श्रीकृष्ण मथुरा से उज्जैन मध्य प्रदेश महर्षि सान्दीपनि के आश्रम गए जहां से अलौकिक विद्याओं का ज्ञान अर्जित किया था। श्रीकृष्ण कुल 125 वर्ष धरती पर रहे। उनके शरीर का रंग गहरा काला था और उनके शरीर से 24 घंटे पवित्र अष्टगंध महकता था। उनके वस्त्र रेशम के पीले रंग के होते थे और मस्तक पर मोरमुकुट शोभा देता था। उनकी दोनों आंखों में प्रचंड सम्मोहन था।

श्रीकृष्ण के बड़े पोते का नाम अनिरुद्ध था जिसके लिए श्रीकृष्ण ने वाणासुर और भगवान शिव से युद्ध करके वाणासुर की पुत्री ऊषा से उसका विवाह कराया। वाणासुर और श्रीकृष्ण का युद्ध उत्तराखंड के रूद्रपयाग और गुप्तकाशी के मध्य स्थित ऊखी मठ के पास हुआ था।

श्रीकृष्ण ने गुजरात के समुद्र के मध्य द्वारिका नाम की राजधानी बसाई थी। द्वारिका पूरी सोने की थी और उसका निर्माण देव शिल्पी विश्वकर्मा ने किया था। उनके बालसखा सुदामा थे और धनिष्ठतम मित्र थे अर्जुन। अर्जुन को श्री बलराम की बहन सत्यभामा ब्याही थी जिससे अभिमन्यु का जन्म हुआ था।

श्रीकृष्ण को जरा नाम के शिकारी का बाण उनके पैर के अंगूठे में लगा। वो शिकारी पूर्व जन्म का बाली था। बाण लगने के पश्चात भगवान स्वलोक धाम को गमन कर गए। ये अवतार नहीं थे बल्कि अवतारी थे...जिसका अर्थ होता है 'पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान'। न तो उनका जन्म साधारण मनुष्य की तरह हुआ था और न ही उनकी साधारण मृत्यु हुई थी।

श्रीकृष्ण ने हरियाणा के कुरुक्षेत्र में अर्जुन को पवित्र गीता का ज्ञान रविवार शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन मात्र 45 मिनट में दे दिया था। श्रीकृष्ण के अनुसार गौ हत्या करने वाला असुर है और उसको जीने का कोई अधिकार नहीं।

सर्व धर्मा परित्यज्यं मामेकं शरणम् व्रज
अहम् त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिंष्यासि मा शुचः (भगवदगीता अध्याय 18, श्लोक 66)

(सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा। तू शोक मत कर)।

हेराक्लीज का रूप धरे यूनान में मौजूद हैं कृष्ण

कृष्ण ने अपनी लीलाओं से यूनानी दार्शनिकों को इस कदर अभिभूत किया कि उन्होंने कृष्ण का तादात्म्य अपने प्राचीन देवता 'हेराक्लीज' से स्थापित कर दिया

कब आएगी सही अर्थों में कृष्ण जन्माष्टमी/ कब होगी धर्म की संस्थापना/ कब होगा दुराचारी व्यवस्था का संहार/ वस्तुतः कृष्ण का जीवन और व्यक्तित्व असामाजिक तत्वों और अत्याचारी लोगों के दुष्कृत्यों से दुखी जनता के नायक का प्रतिनिधित्व करता है। गीता के उपदेष्टा असहायों के संबल और सखा हैं। किंतु समाज में बढ़ते हुए कदाचार और संवेदन शून्यता के इस दौर में कृष्ण तत्व की गैर-मौजूदगी दिखाई देती है। अपनी अस्मत के लिए सुबकती हुई अबोध बालिकाओं की आँखें उस द्वारकाधीश की प्रतीक्षा में पथरा गई हैं जिसने कौरवों की सभा में द्रौपदी की लाज बचाई थी।

असल में जब तक हम समग्रता से जीवन जीने वाले कृष्ण को परंपरागत आस्थाओं तक सीमित रखेंगे, हमारे अंदर अन्याय का प्रतिकार करने और कदाचार से जूझने का संकल्प उत्पन्न नहीं हो सकता। कृष्ण के व्यक्तित्व में जड़-सिद्धांतों व पुरातनपंथी मान्यताओं का कोई स्थान नहीं है। कृष्ण सदैव कर्म के प्रति प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। वह कोई निजी हित साधने या व्यक्तिगत लाभ उठाने के लिए कर्म से प्रेरित नहीं होते। इसलिए दूसरों को भी कर्मफल की चिंता से मुक्ति का संदेश देते हैं।

ऐतिहासिक नजरिए से देखें तो कृष्ण का प्रारंभिक संदर्भ छान्दोग्य उपनिषद में ऋषि अंगिरा के शिष्य एवं वसुदेव और देवकी-पुत्र के रूप में मिलता है। कृष्ण ने आध्यात्मिक तत्व-दर्शन की शिक्षा अंगिरा ऋषि के सान्निध्य में प्राप्त की, जबकि मार्शल आर्ट की तमाम विधाओं सहित चौसठ कलाएं सांदीपनि ऋषि के गुरुकुल में सीखी। इन विद्याओं में उनकी प्रवीणता ही उन्हें जंबूद्वीप से निकालकर ग्रीक सिविलाइजेशन के एक चमत्कारी देवता 'हेराक्लीज' के रूप में लोकप्रिय और पौराणिक बनाती है। कृष्ण ने अपनी लीलाओं से यूनानी दार्शनिकों- नियार्कस, ओनेसिक्रिट्स, मेगस्थनीज, प्लूटार्क व स्ट्रेबो को इस कदर अभिभूत किया कि उन्होंने कृष्ण का तादात्म्य अपने प्राचीन देवता 'हेराक्लीज' से स्थापित कर दिया।

सिकंदर के समकालीन ग्रीक इतिहासकार बताते हैं कि पोरस के युद्ध लड़ते समय भी हेराक्लीज यानी कृष्ण की मूर्ति साथ रखते थे। 'इंडिका' मेगस्थनीज ने लिखा है कि सौरसेनाई (शूरसेन) राज्य की राजधानी मेथोरा (मथुरा) और क्लेईसोबारा (कृष्णपुरा) के निवासी हेराक्लीज देवता की आराधना करते हैं। कुछ बरस पहले यूनान की एक आर्कियॉलजिकल साइट से मिले दो सौ ईसा पूर्व ग्रीक सभ्यता के सिक्कों पर एक देवता को कृष्ण की भांति हाथ में सुदर्शन चक्र लिए हुए और उनके भाई बलराम को गदा व हल के साथ उत्कीर्ण किया गया है।

आप कृष्ण को एक मिथक पुरुष मानें या फिर एक अतिरंजित व्यक्तित्व, वह दैवीय गुणों से संपन्न एक महानायक जरूर रहे होंगे। पुरातत्वविदों को मथुरा के नजदीक मोरा नामक जगह से पहली ईस्वी सदी का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है,

जिसमें तोषा नाम की एक महिला द्वारा पत्थरों से बने एक मंदिर में कृष्ण सहित पांच कृष्णि-वीरों की मूर्तियां स्थापित किए जाने का वर्णन है। इस शिलालेख में इन वीरों को 'भागवत' टाइटल से भी नवाजा गया है। भागवत धर्म के अनुयाई कृष्ण की आराधना के साथ-साथ बलराम, कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न (रुक्मिणी से पैदा), प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध और कृष्ण के जांबवती से उत्पन्न पुत्र सांब की उपासना भी करते हैं। वायु पुराण में इन पांचों को पंचवीर कहा गया है।

महाराष्ट्र के नानाघाट से मिले एक पुरातात्विक अभिलेख में वासुदेव कृष्ण व संकर्षण यानी बलराम की पूजा का उल्लेख मिलता है। कुषाण काल में वासुदेव कृष्ण की पूजा भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित हो चुकी थी। कुषाण वंश के राजाओं हुविष्क व वासुदेव भागवत धर्म के अनुयाई थे। तमिल प्रदेश में भागवत धर्म व कृष्ण की पूजा का प्रचार-प्रसार अलवार संतों के द्वारा किया गया। बारह अलवार संतों की फेहरिस्त में एकमात्र महिला साध्वी 'अंडाल' मीराबाई की तरह कृष्ण की प्रेम दीवानी थी। असल में कृष्ण भक्ति के विस्तृत आकार लेने का एक कारण यह है कि कृष्ण न तो दमनवादी हैं, न पलायनवादी। संघर्षों के बीचों-बीच खड़े वह शांत, अनासक्त और स्थितप्रज्ञ नजर आते हैं।

एनबीटी.-3.9.2018 साभार : इस लेख के मूल लेखक श्री विनोद कुमार यादव जी हैं।

हवन का महत्व

फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर रिसर्च की। जिसमें उन्हें पता चला कि हवन मुख्यतः आम की लकड़ी पर किया जाता है। अब आम की लकड़ी जलती है तो फार्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है तथा वातावरण को शुद्ध करती है। इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस और इसे बनाने का तरीका पता चला। गुड़ को जलाने पर भी ये गैस उत्पन्न होती है।

टोटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपनी रिसर्च में ये पाया कि यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे खतरनाथ रोग फैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है।

हवन की महत्ता देखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी इस पर एक रिसर्च की। क्या वाकई हवन से वातावरण शुद्ध होता है और जीवाणु नाश होता है? अथवा नहीं? उन्होंने ग्रंथों में वर्णित हवन सामग्री जुटाई और जलाने पर पाया कि ये विषाणु नाश करती है। फिर उन्होंने विभिन्न प्रकार के धुएं पर भी काम किया और देखा कि सिर्फ आम की लकड़ी जलाने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए। पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन सामग्री डालकर जलायी गयी तो एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर 94 प्रतिशत कम हो गया। यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाजे खोले जाने और सारा धुआं निकल जाने के 24 घंटे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से 96 प्रतिशत कम था। बार-बार परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि इस एक बार के धुएं का असर एक माह तक रहा और उस कक्ष की वायु में विषाणु स्तर 30 दिन बाद भी सामान्य से बहुत कम था।

यह रिपोर्ट एथ्नोफार्माकोलॉजी के शोध पत्र में भी दिसंबर 2007 में छप चुकी है। रिपोर्ट में लिखा गया कि हवन के द्वारा न सिर्फ मनुष्य बल्कि वनस्पतियों एवं फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले बैक्टीरिया का भी नाश होता है। जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है। हवन करने से न सिर्फ भगवान ही खुश होते हैं बल्कि घर की शुद्धि भी हो जाती है।

अंकुर ते बीज, बीज ते अंकुर, अंकर बीज संभारे
काया ते कर्म, कर्म ते काया, कोई बिरला जना निखारे

अपनी कहे, मेरी सुने, सुनि मिलि एके होय।
हमरे देख जग जात है, ऐसा मिला न कोय।

- कबीरदास

संख्या 108 का रहस्य

।।ॐ।। का जप करते समय 108 प्रकार की विशेष भेदक ध्वनी तरंगें उत्पन्न होती हैं जो किसी भी प्रकार के शारीरिक व मानसिक घातक रोगों के कारण का समूल विनाश व शारीरिक व मानसिक विकास का मूल कारण है। बौद्धिक विकास व स्मरण शक्ति के विकास में उत्पन्न प्रबल कारण है।

।।108।। यह अद्‌भुत व चमत्कारी अंक बहुत समयकाल से हमारे ऋषि-मुनियों के नाम के साथ प्रयोग होता रहा है। अ – 1 आ – 2 इ – 3 ई – 4 उ – 5 ऊ – 6 ए – 7 ऐ – 8 ओ – 9 औ – 10 ऋ – 11 लृ – 12 अं – 13 अः – 14 ॠ – 15 लॄ – 16

क – 1 ख – 2 ग – 3 घ – 4 ड. – 5 च – 6 ज – 8 झ 9 ट – 11 ठ – 12 ड – 13 ढ – 14 ण – 15 – त – 16 थ – 17 द – 1 ध – 19 न – 20 प – 21 फ – 22 ब – 23 भ – 24 म – 25 य – 26 र – 27 ल – 17 व – 29 श – 30 – ष – 32 स – 32 ह – 33 क्ष – 34 त्र – 35 ज्ञ – 36 ड़ ढ़

ओ अहं ब्रह्म (ब्रह्म – ब+र+ह+म 23+27+33+25 – 108)

2. यह मात्रिकाएं 18 स्वर 36 व्यंजन-54 नाभि से आरम्भ होकर ओष्टों तक आती है एवं इनका एक बार चढ़ाव, दूसरी बार उतार होता है, दोनों बार में वे 108 की संख्या बन जाती है। इस प्रकार 108 मंत्रजप से नाभिचक्र से लेकर जिव्हाग्र तक की 108 सूक्ष्म तन्मात्राओं का प्रस्फुरण हो जाता है। अधिक जितना हो सके उतना उत्तम है पर नित्य कम से कम 108 मंत्रों का जप तो करना ही चाहिए।

2. मनुष्य शरीर की ऊँचाई : यज्ञोपवीत, जनेऊ की परिधि : 4 अंगुलियों का 27 गुणा होती है। **4 गुणा 27 = 108**

3 नक्षत्रों की कुल संख्या – 27 प्रत्येक नक्षत्र के चरण 4 अतः जप की विशिष्ट संख्या 108, अर्थात ॐ मंत्र जप कम से कम 108 बार करना चाहिए।

4. एक अद्‌भुत अनुपातिक रहस्य : पृथ्वी से सूर्य की दूरी सूर्य का व्यास 108, पृथ्वी से चन्द्र की दूरी चन्द्र का व्यास 108, अर्थात मंत्र जप 108 से कम नहीं करना चाहिये।

5. हिंसात्मक पापों की संख्या 36 मानी गई है जो मन, वचन व कर्म 3 प्रकार से होते हैं। अर्थात् 36 गुणा 3=108, अतः पाप कर्म संस्कार निवृत्ति हेतु किये गये मंत्रजप को कम से कम 108 अवश्य ही करना चाहिये।

6. सामान्यतः 24 घंटे में एक व्यक्ति 21600 बार सांस लेता है। दिन रात के 24 घंटों में से 12 घंटे सोने व गृहस्थ कर्तव्य में व्यतीत हो जाते हैं और शेष 12 घंटों में व्यक्ति जो सांस लेता है वह है 10800 बार। इस समय में ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। इसीलिए 10800 की इसी संख्या के आधार पर जप के लिये 108 की संख्या निर्धारित करते हैं।

7. एक वर्ष में सूर्य 21600 कलाएं बदलता है। सूर्य वर्ष में दो बार अपनी स्थिति भी बदलता है। छः माह उत्तरायण में रहता है और छः माह दक्षिणायन में। अतः सूर्य छः माह की एक स्थिति में 108000 बार कलाएं बदलता है।

8. 786 का भी पक्का जवाब ।।108।। है।

9. ब्रह्माण्ड को 12 भागों में विभाजित किया गया है। इन 12 भागों के नाम – मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन है। इन 12 राशियों में नौ ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु विचरण करते हैं। अतः ग्रहों की संख्या 9 में राशियों की संख्या 12 से गुणा करें तो संख्या 108 प्राप्त हो जाती है।

10. 108 में तीन अंक हैं, 1, 0, 8 इनमें एक '1' ईष्वर का प्रतीक है। ईश्वर का सत्ता है अर्थात् ईश्वर 1 है और मन भी एक है, शून्य '0' प्रकृति को दर्शाता है। आठ '8' जीवात्मा को दर्शाता है। क्योंकि योग के अष्टांग नियमों से ही जीव प्रभु से मिल सकता है। जो व्यक्ति अष्टांग योग द्वारा प्रकृति के आठों मूल से विरक्त होकर ईष्वर का साक्षात्कार कर लेता है उसे सिद्ध पुरूष कहते हैं। जीव '8' को परमपिता परमात्मा से मिलने के लिए प्रकृति '0' का सहारा लेना पड़ता है। ईश्वर और जीव के बीच में प्रकृति है। आत्मा जब प्रकृति को शून्य समझता है तभी ईश्वर '1' का साक्षात्कार कर सकता है। प्रकृति '0' में क्षणिक सुख है और परमात्मा में अनंत और असीम। जब तक जीव प्रकृति '0' को जो कि जड़ है उसका त्याग नहीं करेगा अर्थात शून्य नहीं करेगा, मोह माया को नहीं त्यागेगा तब तक जीव '8' ईश्वर '1' से नहीं मिल पायेगा पूर्णता 189

को नहीं प्राप्त कर पायेगा। 9 का अंक पूर्णता का सूचक है।

11. 1-ईश्वर और मन, 3- द्वैत दुनिया संसार, 3- गुण प्रकृति, माया, 4- अवस्था भेद वर्ण, 5- इन्द्रियां, 6- विकार, 7- सप्त ऋषि सप्तसोपान, 8- आष्टांगयोग, 9- नवधा भक्ति पूर्णता

12. वैदिक विचारधारा में मनुस्मृति के अनुसार, अहंकार के गुण 2- बुद्धि के गुण 3- मन के गुण, 4- आकाश के गुण, 5- वायु के गुण, 6- अग्नि के गुण, 7- जल के गुण, 8- पृथ्वी के गुण, 9- इस प्रकार 2+3+4+5+6+7+8+9 अतः प्रकृति के कुल गुण 44, जीव के गुण, 10 इस प्रकार संख्या का योग - 54 अतः सृष्टि उत्पत्ति की संख्या 54, एवं सृष्टि प्रलय की संख्या 54, दोनों संख्याओं का योग - 108

13. संख्या '1' एक ईश्वर का संकेत है। संख्या '0' जड़ प्रकृति का संकेत है। संख्या '8' बहुआयामी जीवात्मा का संकेत है। यह तीन अनादि परम वैदिक सत्य है। यही पवित्र त्रेतवाद है। संख्या '2' से '9' तक एक बात सत्य है कि इन्हीं आठ अंकों में '0' रूपी स्थान पर जीवन है। इसलिये यदि '0' न हो तो कोई क्रम गणता आदि नहीं हो सकती। '1' की चेतना से '9' का खेल। '8' यानी '2' से '9'। यह '8' क्या है। मन के '8' वर्ग या भाव। ये आठ भाव ये हैं - काम की विभिन्न इच्छायें।

गुरु-पूर्णिमा

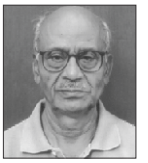

प्रस्तुति-अमरनाथ
प्रधान संपादक

गुरु कोई व्यक्ति नहीं, कोई शरीर नहीं, गुरु एक तत्व है, एक शक्ति है। गुरु यदि शरीर होता, तो इस छोटी सी दुनिया में, एक ही गुरु पर्याप्त होता। गुरु एक भाव है, गुरु श्रद्धा है। गुरु समर्पण है। आपका गुरु आपके व्यक्ति का परिचय है। कब, कौन, कैसे आपके लिये गुरु साबित हो, यह आपकी दृष्टि एवं मनोभाव पर निर्भर करता है। गुरु प्रार्थना से मिलता है। गुरु समर्पण से मिलता है। गुरु दृष्टा-भाव से मिलता है, गुरु किस्मत से मिलता है। और गुरु किस्मत वालों को मिलता है।

सः गुरुवे नमः

देवानाम्च ऋषिणाम्च गुरुम् कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतम् त्रिलोकेशम् तं नमामि बृहस्पतिम्।।

आदिकाल से भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। उसी गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु प्रतिवर्ष गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही आये आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा व व्यास पूर्णिमा कहते हैं। ये महीना भक्ति के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। वर्षा होने की वजह से तापमान कम होता है तथा गर्मी के ताप से धरती शीतलता पाती है और फसल में वृद्धि होती है। गुरु पूर्णिमा गुरु से जुड़ने का कालखंड है। गुरु पूर्णिमा के दिन श्रद्धानुसार गुरु-पूजन-अर्चन का विधान है। यह पावन दिन गुरु के त्याग और तप को समर्पित है। शिष्य को जीवन में सफलता मिले इसके लिये उचित मार्गदर्शन कराने वाले गुरु की खोज का दिन है। ज्ञान बांटने और अर्जन करने की इस अटूट श्रृंखला को गुरु-शिष्य परम्परा कहते हैं। इस दिन शिष्ट भी गुरु परम्परा का निर्वाह करते हैं। जीवन में गुरु और शिक्षक के महत्व को आने वाली पीढ़ी को बताने के लिए यह पर्व आदर्श रूप है। भारतवर्ष में हजारों साल से गुरु-शिष्य परम्परा चली आ रही है। महाभारत के रचयिता द्वैपायन व्यास का जन्म भी गुरु पूर्णिमा के दिन हुआ था जो वेदों के मर्मज्ञ ज्ञाता थे।

गुरु पूर्णिमा ऐसा शुभ दिवस है जिस दिन हम अपने सभी गुरुओं के प्रति धन्यभागी होते हैं। जितने भी गुरुओं की कृपा हमारे जीवन में बरस रही है, हम नतमस्तक होकर उन सभी का धन्यवाद करते हैं। यह पवित्र दिन उनकी प्रार्थना-अर्चन का होता है। **'पूज्य गुरुदेव! आप हमारी जीवन नैया को खैवनहार बनकर पार लगा रहे हैं, पल-पल आपका साथ हमें मिल रहा है, और जीवन अब सुंदर व सरल हो गया है। हमारे जीवन में आकर आपने हमें धन्य कर दिया है।**

प्राचीन काल में गुरु शिष्य मिलकर गंगा या किसी भी नदी के किनारे गुरु पूर्णिमा पर स्नान और पूजा अर्पण करके

नदी की आरती कर उसमें फूल विसर्जित किया करते थे। वहीं नदी तट पर आश्रम बनाकर गुरु अपने शिष्यों को गुरुमंत्र देते थे। शिष्यों द्वारा गुरु-धारण करने की परम्परा पुरातन समय से ही चली आ रही है। इस प्रकार गुरु-ज्ञान से हमारे मस्तिष्क में अच्छे विचारों और ज्ञान की वृद्धि होती है तथा मस्तिष्क का विकास होता है। माना जाता है कि इस गुरु परम्परा से देवता भी प्रसन्न होते थे तथा मानव जीवन सुखमय रहता था।

शास्त्रों में गुरु का स्थान ईश्वर से ऊपर कहा गया है क्योंकि गुरु बिन ज्ञान न होवे। अंधकार से प्रकाश पुंज की ओर ले जाने वाले को ही गुरु कहते हैं।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरूर्देवो, महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मैं श्री गुरवै नमः।
ध्यान मूलं गुर्रोमूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पदम्। मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरूः कृपा।।

गुरु साक्षात ब्रह्म रूप है। गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु को महादेव समान माना गया है। गुरु बिन गति न होय। गुरु के ज्ञान से सदगति प्राप्त होती। आषाढ़ मास में काले बादलों से घिरे अंधकार को पूर्णिमा की चांदनी से रोशन हुए संसार की भांति, गुरु शिष्य के मस्तिष्क के तम को ज्ञान रूपी गंगाजल से धोकर शुद्ध करते हुए आलोकित करते हैं। जो आत्मा से परमात्मा का मिलन जो कराते हैं वही गुरु होते हैं। देवता भी इनके तेज व प्रभाव को नतमस्तक होते हैं। शास्त्रों में **गु** का अर्थ है अंधकार और **रु** का अर्थ है निरोधक। अर्थात् अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर से जाने वाले को गुरु कहा जाता है। गुरू और देवता में वैसे तो समानता है। सद्गुरु की कृपा या भक्ति से हम ईश्वर के साक्षात्कार कर सकते हैं। परंतु गुरु की कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। प्रकाश की ओर ले जाने का काम सिर्फ एक गेुरु ही कर सकता है। गुरु का आशीर्वाद सबके लिए कल्याणकारी होता है।

आज के दिन शिष्य अपनी सामर्थ्यानुसार गुरु-पूजन करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि आकाश के मेघ जिस तरह धरती को नीर से तर-बतर कर देते हैं ठीक उसी तरह आज के दिन गुरु अपनी करुणा धारा से शिष्य को भिगोते हैं।

गुरु के पास एक शक्ति होती है। शक्ति अर्थात ज्योति। इसी ज्योति से वे अपने शिष्यों के हृदय का अवलोकन एवं मूल्यांकन करते हैं। वे देखते हैं कि उनका शिष्य अब तक आध्यात्म के किस स्तर पर पहुंच पाया है और कितना बाकी है पहुंचने में, जिसका अंदाजा शिष्य को भी नहीं होता। शिष्य तो नन्हे बालक समान गुरु की शरण में रहकर अपना कर्म करते रहते हैं। उसे कोई चिंता नहीं रहती। बस, दिल में **गुरु का नाम केवलम्**, का जाप चलता रहता है। शिष्य अपने मन में फैले विकारों को दूर करने की भरसक कोशिश करता रहता है ताकि उसके मन मंदिर में गुरु विराजमान रहे। गुरु भी परम स्नेह से अपने शिष्य के मन के विकारों को दूर कर उसे सही पथ पर चलाने के लिए प्रयासरत रहते हैं और एक दिन ऐसा समय आता है जब गुरु अपने शिष्य के हृदय को प्रकाशित कर स्वयं धन्य होते हैं। बड़ा ही अनमोल सम्बन्ध होता है गुरु और शिष्य का दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। शिष्य भी सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मन, मुझ पर, मेर गुरु, गुरु-सन्तान, और गुरुवंश के पूर्व-पुरुषों पर दया दृष्टि कर।

परम्परा रही है कि गुरु पूजन के दिन से चार माह (चतुर्मास) तक परिव्राजक साधु-संत एक ही स्थान में रह कर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। गुरु की महत्ता सभी धर्मों में मानी है। ईश्वर के अस्तित्व को लेकर विभेद हो सकता है, परन्तु किसी भी धर्म-सम्प्रदाय में गुरु को लेकर आज तक कोई मतभेद नहीं हो सका। गुरु को सभी ने माना है। प्रत्येक गुरु ने अपने गुरुओं को आदर-प्रशंसा एवं पूजा सहित पूर्ण सम्मान दिया है। सिख-धर्म में तो अपने दस गुरुओं की वाणी को ही जीवन का सत्य मानते हैं और गुरुग्रंथ साहिब ही उनका धर्म ग्रंथ है जिसमें गुरुओ की वाणी संकलित है। कबीर दास जी ने कहा है कि - **गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पांय, बलिहारी गुरु आपनो गोविन्द दियो बताय।** गुरु की महिमा अनन्त है, उन्हें ईष्वर से भी श्रेष्ठ कहा गया है, इसी कारण कहते हैं जब गुरु और गोविन्द अर्थात ईश्वर दोनों खड़े हों तो पहले उस गुरु की वन्दना करनी चाहिये जिसने ईश्वर से साक्षात्कार का सुन्दर संयोग बना दिया। सबसे अच्छी गुरु की सेवा होगी कि हम गुरु के विचार, उनकी शिक्षा और महानता को जनता के सामने रखें। उस दिन बिल्कुल चुप रहकर गुरु द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन-मनन चिंतन करना, चित्त को शांत रख, स्वाध्याय करना। हमारी संस्कृति ऐसी रही है कि हमारे गुरु अपने सूक्ष्म ज्ञान को अटूट विशवस और पूर्ण समर्पण के साथ अपने शिष्यों तक पहुंचाते रहे हैं। गुरु रामकृष्ण परमहंस और

उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द का उदाहरण विश्वप्रसिद्ध है।

गुरुकृपा से ही स्वामी विवेकानंद जी ने अपने अन्दर एक नई ऊर्जा, एक नई शक्ति, नई स्फूर्ति अनुभव की, और आजीवन वे गुरु के निर्देश पर हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये निकल पड़े। वीर शिवाजी के गुरु रामदास समर्थ जी, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य, संत कबीरदास जी के गुरु रामानंद जी, कौन्तेय अर्जुन के गुरु आचार्य द्रोण जी के नाम भला किसे याद नहीं होंगे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के डॉ. केशव जी हेडगेवार जी एवं गुरु गोलवलकर जी को भी कौन भूल सकता है? इस संघ के कार्यक्रमों में गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु-पूजन की परम्परा शुरू से चली आ रही है। उस दिन गैरिक-ध्वज को गुरु के रूप में वरण-नमन कर स्वयं सेवक पहले पुष्प अर्पित कर श्रद्धा ज्ञापित करते हैं, पश्चात अपनी सामर्थ्यानुसार वर्ष में एक बार ध्वज को सहयोग राशि अर्पित करते हैं। इसी पैसे से वर्ष भर संघ के प्रचारकों का एवं कार्यालय का खर्च चलता है। यह गुरु के प्रति शिष्य का प्रतिवेदन, अवदान, एक स्वस्थ परम्परा का निर्वहन है।

दूजा नहिं गुरु सरिस उपमान। गुरु से लेते ईश भी ज्ञान।।

गुरु हैं तो जिंदगी शुरू है। यह पंक्ति अक्षरशः सही है। मनुष्य के जीवन में गुरु का प्रवेश उसके भाग्य का उदय करने वाला होता है। गुरु ही हमें जीवन जीने की कला सिखलाते हैं। गुरु पर असीम विश्वास रखने से जीवन की राहें सुगम हो जाती है। गुरु यह नहीं कहते कि हमारे जीवन में कठिनाईयों व समस्यांएं आयेंगी नहीं बल्कि वे हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि उस समय हम अकेले नहीं होंगे। गुरु-कृपा हमारे साथ-साथ रहेगी और हमें जीवन की कठिनाइयों को पार करने में हमारी सहायता करेगी और हमें उस समय हिम्मत व हौसला देगी। उन कठिनाइयों में तप कर हम कुंदन की तरह निखर कर बाहर आयेंगे।

इस वर्ष 27 जुलाई, 2018 की गुरु पूर्णिमा का अलग ही महत्व रहा। इस सदी का सबसे लंबा चंद्रग्रहण इस दिन पड़ा। पूजा-पाठ, दान-पुण्य, जप-तप तथा सेवा, साधना और सत्संग के लिये यह दिन शुभ माना गया। गुरु पूर्णिमा का दिन गुरुभक्तों के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। पूरी मानव जाति पर गुरु कृपा सदैव बनी रहे, हर गुरु पूर्णिमा पर यही कामना व प्रार्थना होनी चाहिए।

गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वहन करते समय शिष्य को गुरु की सदाशयता, आचरण और ज्ञान, तथा गुरु को शिष्य की पात्रता और योग्यता की पहले परख कर लेनी चाहिए।

न हु कोई गुरु खेवं, बच्चइ सीसेसु सत्तिसुमहेसु
जह दिणयरो पभासइ, सुहेण भावा सचक्खूणं
देन्तो च्चिय उवएसं, हवइ कयत्थो गुरू सुसीसाणं
विवरीयाण निरत्थो, दिणयरतेओ व्व उलुयाणं।। (अध्याय-94 पंक्ति-23-24)

आचार्य विमलसूरि (पउमचरियं) से साभार

भावार्थ - जिस प्रकार सूर्य नेत्र वाले को सब पदार्थ आसानी से दिखलाता है, उसी प्रकार महान शक्तिशाली शिष्यों में कोई भी गुरु खेद प्राप्त नहीं करता। सुशिष्यों को उपदेश देने पर गुरु कृतार्थ होता है, किन्तु जिस तरह उल्लू के लिए सूर्य निरर्थक होता है उसी तरह विपरीत अर्थात कुशिष्य को उपदेश देने पर वह निरर्थक होता है।

आत्मा से परमात्मा का मिलन जो कराते हैं वही सच्चे गुरु होते हैं। देवता भी इनके तेज व प्रभाव को नतमस्तक होते हैं। विद्यालयों में भी गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुजनों या अध्यापकों को सम्मानित किया जाता है। गुरु के ज्ञान से मानव को परमात्मा और सदगुरु की प्राप्ति होती है। इस परम्परा को पूरी श्रद्धा से मनाया जाना चाहिए।

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजे, गुरु बिन भगति न होय।
गुरु बिन संशय ना मिटे, गुरु बिन मुकति न होय।।

विधा-सार ललित छंद

अपराजिता (अयोध्या नगरी) से राम वन गमन वर्णन

डॉ. वीरेन्द्र प्रताप सिंह 'भ्रमर', चित्रकूट

अधिनायक अधिरूढ. अधोरथ, अनालंब अनुयाई।
अनुयाता, अनुचर, आक्रोशित, आवेशित तरुणाई।।
अनुप्रवेश अनुभूति, अलौकिक, अनुयात्रिक अनुभ्राता।।
अनुभाषण, अनुबंध, अभागी, अनुद्वेग, अनुजाता।
अलुसोचन, अनुशासन, अनुश्रुति, अपराजिता अघाई।
अधिनायक अधिरूढ़ अधोरथ, अनालबंब अनुयाई।।
अधिष्ठान अभिशप्त अधीरा, अणु-अनांगना व्यापी।
अस्तिमान अस्ताघ असंगत, अविचारी अधिपापी।
अपराजिता अस्तित्व अकल्पित, असहनीय अमराई।
अधिनायक अधिरूढ़ अधोरथ, अनालंब अनुयाई।।

भावार्थ :- श्री राजा राम (अधिनायक) वनवास गमन के लिए रथ के ऊपर (अधोरथ) आरूढ़ हो गये हैं जिससे उनको चाहने वाले आधारहीन (अनालंब) हो गये हैं। उनके पीछे चलने वाले (अनुयाता) सेवक (अनुचर) भी अवगमन से आक्रोशित हैं और युवावर्ग में भी आवेश व्याप्त है। अयोध्या नगरी में प्रवेश करते ही (अनुप्रवेश) राम वन गमन से अनभिज्ञ हो रही है। कथोपकथन (अनुभाषण), किये गये अनुबंधों (राम को वनवास भरत को राज्य) उस अभागे अनुज (अनुजाता) भरत को भय (अनुद्वेग) व्याप्त हो जाता है। साथ ही इस सब घटनाओं (अनुसोचन) के बाद भी नियम में आबद्ध (अनुश्रुति) अनुशासन-प्रिय अयोध्या नगरी शान्त तथा संतृप्त है। अधिष्ठान अर्थात अयोध्या नगरी का छोटा से छोटा व्यक्ति (अणु) अभिशप्त, अधीर और बेसुध (अनांगना) है। धनी व्यक्ति (अस्तिमान) को भी बहुत गहरा आघात (अस्ताघ) लगा है और वह इसे अनुचित (असंगत) मानते हैं। केवल विवेकहीन (अविचारी) और पाप में संलग्न ही अपने विचार नहीं व्यक्त कर रहे हैं। इस प्रकार दुख के सागर में समाई अयोध्या नगरी (अपराजिता) के अचानक आये अकल्पनीय बदलाव (अस्तित्व)से त्रण-त्रण (अमराई) असहनीय पीड़ा से दुखी है।

श्री राम जन्म पर दीपावली

दोहा - जलचल थलचर सकल सब, नभचर लगकर धरन।
रट रट नर हर भव तरन सर बस पटकत शरन।

छन्द - जय जय जय जय करन अवध जन, रघवर जनम मगन दशरथ तन
सजवत भवन नगर गदगद मन, वरनन कर कर।।
सज सज लछमन भरत चरत सब तज तज अपजस परस परस अब
भज भज भगत परत चरनन नव, धर नन पर पर।।
जगमग जगमग चमकत सब घर, तन मनश्रम कर सर चरनन धर
रग रग हरसत धरम करत नर, कर नन भर भर।।
समजत भगवन अजर अमर हर, गनपत कमल नयन दरसन कर
गदगद 'अटल' नमन कर सब घर, चरनन हर हर।।
श्री छेदेलाल अटल (वामांगी से साभार)

'ग़ज़ल : हक़ीक़त'

हक़ीक़त को किसी भी हाल में झुठला नहीं सकते
महज़ वादों से अब आवाम को भरमा नहीं सकते

ज़मी पर चाँद ला देंगे, समां गुलज़ार कर देंगे!
महज़ जुम्लों से अहले आम को फुसला नहीं सकते

न सेंको रोटियाँ अब जाति, मज़हब, धर्म के ऊपर
दिलों को बांटकर इनको सुकूँ से खा नहीं सकते

वतन की रोटियाँ खाके जो गाते गीत दुश्मन के,
किसी भी हाल में उनको तो हम अपना नहीं सकते

उठाते उंगलियाँ जो देश के जांबाज़ वीरों पर,
वतन को चाहने वालों से बचकर जा नहीं सकते

नसीहत नर्म लहजे में ही देना लाजमी है अब
कड़ी बातों से रिश्तों की गुठन सुलझा नहीं सकते

दिलों में, 'भान', जो रखते हैं नफ़रत के तरन्नुम को,
वतन की शान में खुलकर तराने गा नहीं सकते

उदयभान पाण्डेय 'भान'
लखनऊ

जज़्बात

ये सवाल क्यों, उठी निगाह क्यों?
सांस-सांस में, आह-आह क्यों?
भागता फिर रहा हर शख़्स यहाँ।
सिक्कों के पीछे, तबाह क्यों?
ये दुनिया दीन से दूर है।
दुनिया में रहे अब अल्लाह क्यों?
दुनियादारी हमें भी आ गई।
दुनिया की पकड़ी राह क्यों?
गम का खजाना है यही।
दुनिया की 'सैलाब' फिर चाह क्यों?

फ़ाकेहा

एक उभरता हुआ कलाकार जो बन गया लेखाकार

भावना के पुराने सदस्यों में एक श्री नरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव की उपलब्धियां बहुत दिलचस्प है। इनको बचपन से ही नृत्य कला में अत्यन्त रुचि थी परन्तु इनके पिताजी इस कला के पक्ष में नहीं थे। अच्छी परिस्थितियों में प्रगति करना सुगम होता है परन्तु विपरीत हालातों में आगे बढ़ना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। आपने किसी प्रकार से अपने पिताजी को सहमत करके भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ में वर्ष 1969 में प्रवेश ले लिया। श्री नरेन्द्र नाथ ने बताया कि इस महाविद्यालय से क्रमशः मणिपुरी नृत्य, लोक नृत्य तथा भरतनाट्यम नृत्य की शिक्षा 1983 तक प्राप्त की तथा कथक नृत्य से प्रभाकर प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से किया। इस प्रकार भरपूर शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात यह कला जगत की सुनहरी दुनिया में आ गये। बताया गया कि सन् 1974 में जब लखनऊ में दूरदर्शन केन्द्र खुला था तो सबसे पहले मणिपुरी नृत्य के कलाकार वह स्वयं ही थे। इसके अतिरिक्त भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ में जब सर्वप्रथम नृत्य कार्यशाला हुई तो उसमें भी भरतनाट्यम नृत्य प्रशिक्षण देने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। साथ ही इन्होंने अपने पिताजी की भावनाओं का आदर करते हुए राज्य विद्युत परिषद में नौकरी भी की तथा लेखाकार के पद पर कार्य करते हुए 31.01.2010 को सेवानिवृत्त हुए।

कला जगत में इनके नृत्य मनोहरी तथा हृदय में छाप छोड़ने वाले होते थे इसलिये इनके प्रदर्शन जहां जहां भी हुए वहां के स्थानीय समाचार पत्रों में इनकी बहुत प्रशंसा पढ़ने को मिली। सेवानिवृत्ति के बाद भी इनकी लग्न में कमी नहीं आई और यह अभी भी परीक्षक का कार्य करते हैं। उल्लेखनीय है कि मार्च 2016 में प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद ने एक कार्यक्रम में इनको निर्णायक नियुक्त किया था जो भावना के लिये गर्व की बात है। स्पष्टतयः श्री नरेन्द्र नाथ अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं। इनको गायन का भी समुचित ज्ञान है तथा इन्होंने अपने निवास स्थान पर एक संगीत केन्द्र नटराज के नाम से खोला हुआ है जो प्रयाग संगीत समिति से मान्यता प्राप्त है। इनकी पत्नी श्रीमती साधना भी गायन में निपुण हैं तथा Vocal Music से स्नातक हैं। श्री नरेन्द्र नाथ एक मधुरभाषीय व्यक्ति हैं तथा सेवानिवृत्ति उपरान्त सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्रस्तुतकर्ता : इं. सुशील कुमार शर्मा

स्वतंत्र भारत

15 अगस्त 1947 को प्रकाशित समाचार पत्र

राष्ट्र को नमन

महासचिव(एडवोकेसी)

श्री अशोक कुमार मल्होत्रा

चीफ़ मैनेजर (प्रोजेक्ट्स) (से.नि.),
एच.ए.एल., लखनऊ
फोन : 0522-2357738/09451133617
ई मेलः akmalhotra123@rediffmail.com
उप-महासचिव सम्बद्ध महासचिव(प्रशासन)
संयोजक, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

श्री जगमोहन लाल जायसवाल

सहायक अभियंता (से.नि.),
सिंचाई विभाग, उ.प्र. फोनः 09450023111
उप-महासचिव सम्बद्ध महासचिव(एडवोकेसी)
संयोजक, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ तथा सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

श्री सतपाल सिंह

अधीक्षण अभियंता (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोनः 09839043458
ई.मेलः satpalsngh@yahoo.com
सह-कोषाध्यक्ष
सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ

श्री आदित्य प्रकाश सिंह

स्पेशल असिस्टेंट (से.नि.), सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इन्डिया
फोनः 09628180153
सह-कोषाध्यक्ष (अस्थाई सृजित अतिरिक्त पद)

श्री हरीश चन्द्र शुक्ल

वरिष्ठ शाखा प्रबंधक (से.नि.), सिन्डिकेट बैंक
फोनः 09455275441/08400121385
ई.मेलः shukla.harish@yahoo.co.in
सचिव, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ, प्रधान सम्पादक, सम्पादन प्रकोष्ठ, सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-प्रभारी, कानपुर रोड तथा रायबरेली रोड के दोनों ओर का क्षेत्र

श्री अमर नाथ

जूनि.इंजी. (से.नि.), लोक निर्माण विभाग, उ.प्र.
फोन : 09451702105
सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र

श्री दिलीप कुमार वीराणी

सहा.अभि. (उ.प्र. सेतु निगम)
फोन : 94415107533
सचिव, वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ
सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

डॉ. नरेन्द्र देव

वरिष्ठ अधीक्षण अभियन्ता (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.
फोन : 0522-2356158/09451402349
ई.मेल : deonarendra740@gmail.com
सचिव, प्रसादम् सेवा प्रको-ठ तथा सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रको-ठ- प्रभारी महानगर तथा आस पास का क्षेत्र

श्री राजेन्द्र कुमार चुघ

वरिष्ठ वाणिज्य प्रबंधक (से.नि.), उ.प्र. निर्यात निगम
फोनः 0522-2330614/09450020659
ई.मेलः rajanchugh53@gmail.com
सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-प्रभारी निराला नगर तथा आसपास का क्षेत्र

डॉ. छेदा लाल वर्मा

प्रोफेसर (से.नि.) बॉटनी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
फोन : 0522-2787872/09919960317
ई.मेलः dr.clverma@rediffmail.com
उप-महासचिव सम्बद्ध प्रमुख महासचिव
संयोजक, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ

श्री रमा कान्त पाण्डेय

अपर सचिव (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पोरेशन लि.
फोनः 0522-2355973/09839395439/09415584568
ई.मेलः aark_p@rediffmail.com
उप-महासचिव सम्बद्ध महासचिव(कार्यान्वयन)
संयोजक, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ एवं सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-प्रभारी, इन्दिरानगर तथा आस पास का क्षेत्र

श्री देवेन्द्र स्वरूप शुक्ल

अधीक्षण अभियंता (से.नि.), उ.प्र. राज्य विद्युत परिषद
फोन : 0522-4006191/09198038889
ई.मेलः devpreet1977@yahoo.com
कोषाध्यक्ष

श्री प्रेम शंकर गौतम

महाप्रबन्धक (से.नि.),
उ.प्र. वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन लि.
फोन : 0522-2713283/09451134894
सम्प्रेक्षक
संयोजक, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री मनोज कुमार गोयल

अधि.अभि.(से.नि.), उ.प्र. आवास एवं विकास परिषद
फोन : 0522-2329439/09335248634
ई. मेल : goel_mk10@rediffmail.com
सचिव, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ
सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

श्रीमती अर्चना गोयल

गृहणी एवं सामाजिक कार्य

फोन : 0522-2329439/09389193715
सचिव, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ

श्री देवकी नन्दन 'शांत'
उप महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पोरेशन लि.
फोन : 09935217841/09889098841
ई. मेल : deokinandan@medhaj.com
सचिव, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ

श्री पाल प्रवीण, अध्यक्ष (से.नि.),
काशी ग्रामीण बैंक (यूनियन बैंक का उपक्रम)
फोनः 09919238189
ई.मेलः palpravin@rediffmail.com
सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-

श्री सत्य देव तिवारी
वरिष्ठ शाखा प्रबंधक (से.नि.), यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया
फोनः 0522-2772874/09005601992
ई. मेल : satyadeo1948@gmail.com
सदस्य, भावना प्रसादम सेवा

श्री विनोद कुमार कपूर
फ़ेकल्टी (से.नि.), कॉलेज ऑफ़ टेक्नोलॉजी, पंतनगर
फोनः 0532-2321002/09984245000
ई.मेलः vinodhkapur@rediffmail.com
सदस्य, भावना प्रसादम सेवा

श्री विशाल सिंह
विजयश्री फाउण्डेशन (प्रसादम सेवा)
फोनः 9935888887
सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ
सदस्य, प्रसादम् सेवा प्रकोष्ठ

श्री राम मूर्ति सिंह
सहायक अभियन्ता (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पोरेशन लि.
फोनः 09415438548
ई.मेलः rmmurtisingh231218@gmail.com
सह-सम्पादक, भावना प्रकाशन

डॉ.(कु) अवनीश अग्रवाल
प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
फोनः 09451244456
ई.मेलः dravneesh@yahoo.com
सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ
सदस्य, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ

श्रीमती रेखा मित्तल
फोन : 0522-2746862/09415089151
सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री सुमेर अग्रवाल
व्यापारी-तीरथ पीके वेन्चर
फोनः 0522-3919319/09415025151
ई.मेलः sumeragarwal@gmail.com
सचिव, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ

श्री अवधेश कुमार सिंह राठौर
भारतीय प्रशासनिक सेवा (से.नि.)
फोन : 0522-2328112/09452687233
ई.मेलः to.aksrathore@gmail.com
सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ

श्री राम स्वरूप यादव
वरिष्ठ नागरिक समिति (ग्राम-हरैया)
फोन : 09455508230
सदस्य, वाह्य सम्पर्क प्रकोष्ठ

श्री पुरुषोत्तम केसवानी
वरिष्ठ प्रबंधक (से.नि.), सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इन्डिया
फोनः 0522-2321461/09450021082/08604967902
ई.मेलः purshottam.keswani@gmail.com
सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ

श्री रमेश प्रसाद जायसवाल
अपर आयुक्त ग्रेड-1 (से.नि.), उ.प्र. वाणिज्य कर विभाग
फोनः 09760617045
ई.मेलः jaiswalrp1954@gmail.com
सदस्य, ग्राम्यांचल एवं निर्धन-जन सेवा प्रकोष्ठ,
सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ

श्री विश्व नाथ सिंह, प्रगतिशील कृषक,
फोनः 09415768055
ई.मेलः yogendra.lko20@yahoo.com
सम्पादक, भावना प्रकाशन, सदस्य, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ
सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-
प्रभारी जानकीपुरम (विस्तार सहित) एवं आसपास

श्री सुशील कुमार शर्मा
अपर निदेशक (से.नि.), प्रशिक्षण एवं सेवायोजन, उ.प्र.
फोनः 0522-2735951/08765351190
ई.मेलः sksharma.ed@gmail.com
सदस्य सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ (विकास नगर क्षेत्र)

श्री ओम प्रकाश गुप्ता
भारतीय जीवन बीमा एजेन्ट
फोन : 9415052197
सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ

श्रीमती श्याम बाला सिंह
फोनः 0522-2739439/09565945179
ई.मेलः dramvira@gmail.com

सदस्य, महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ

श्रीमती वीना सक्सेना

फोनः 09415103378

सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

श्रीमती आशा गोयल

फोन : 09415470638

ई. मेलः arvindasha68@gmail.com

सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री सत्य नारायण गोयल

व्यवसायी (ब्यूम पाइप तथा लॉकिंग टाइल्स निर्माता)

फोनः 09335243519

सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

श्री सिद्धेश्वर नाथ शर्मा

अधीक्षण अभियंता (से.नि.), सिंचाई विभाग, उ.प्र.

फोनः 07524968080

ई.मेलः siddheshwar.sharma@gmail.com

सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

श्री महेश चन्द्र सक्सेना

उप महाप्रबंधक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पोरेशन लि.

फोन : 0522-2423567/08960687921

ई.मेल : mcsaxena000@gmail.com

सदस्य, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ

सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री उदय भान पाण्डेय

मुख्य महाप्रबंधक, उ.प्र. पावर कार्पोरेशन लि.

फोन : 0522-2393436/09415001459

ई मेलः udaibhanp@yahoo.com

सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-

प्रभारी राजेन्द्रनगर, मोतीनगर, आर्यनगर, ऐशबाग एवं आसपास का क्षेत्र

श्री विनोद चन्द्र गर्ग

व्यापारी- चन्द्रा मेटल कम्पनी, लखनऊ

फोन : 0522-2339298/09415012307

सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-

प्रभारी अलीगंज एवं आस पास का क्षेत्र

श्री ओम प्रकाश पाठक

विशेष सचिव (से.नि.), अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास विभाग, उ.प्र.

फोनः 0522-2323728/09415022932

ई.मेलः pathak.op@gmail.com

सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-

प्रभारी त्रिवेणीनगर, प्रियदर्शिनीनगर, केशवनगर सहित सीतापुर रोड तथा आई.आई.एम. रोड के दोनों ओर का क्षेत्र

श्री दीन बन्धु यादव

क्षेत्रीय प्रबंधक (से.नि.),

उ.प्र. सह. ग्राम विकास बैंक लि.

फोनः 0522-6533261/09956788187

सदस्य, भावना प्रसादम् सेवा प्रको-ठ

श्री नरेश भार्गव

पी.ए.सी. मुख्यालय में सेवारत

फोनः 09918927315/08188057464

सदस्य, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ

श्री इन्द्र कुमार भारद्वाज

उप महाप्रबंधक (से.नि.), उ.प्र. पावर कार्पोरेशन लि.

फोनः 09415911702

ई.मेलः ikbhlkw@yahoo.co.in

संयोजक, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री महेश चन्द्र निगम

सहायक अभियन्ता, वि./याँ. (से.नि.),

लोक निर्माण विभाग, उ.प्र.

फोन : 0522-2325716/09335905126

ई.मेलः maheshnigam77@yahoo.com

सदस्य, शिक्षा सहायता प्रकोष्ठ

श्री गुरू दयाल शुक्ला

जिला लेखापरीक्षा अधिकारी (से.नि.), वित्त विभाग, उ.प्र.

फोनः 0522-2759277/09415003605

सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

श्री शैलेन्द्र मोहन दयाल

मुख्य अभियन्ता (से.नि.), उ.प्र.रा. विद्युत परिषद

फोनः 0522-2446086/09455550616

ई.मेलः smdayal39@gmail.com

सदस्य, अनौपचारिक शिक्षण प्रकोष्ठ

सदस्य, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ

श्री चन्द्र भूषण तिवारी

पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता

फोनः 09415910029

सदस्य, सांस्कृतिक कार्य प्रकोष्ठ

सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ

श्री अशोक कुमार

अधिशासी निदेशक (से.नि.),

उ.प्र. पावर ट्रांसमिशन कार्पो. लि.

फोनः 0522-2780177/09794122946

ई.मेलः mehrotra_ak2006@yahoo.co.in

सदस्य, सहयोग एवं सेवा प्रकोष्ठ-
प्रभारी गोमती नगर का सम्पूर्ण क्षेत्र
श्री तीर्थराज मौर्य
शाखा प्रबंधक (से.नि.), यूनियन बैंक ऑफ़ इन्डिया
फोनः 09412169590
ई.मेलः rajmaurya1950@gmail.com
सदस्य, वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ
श्री सुरेन्द्र नारायण सिंह टंडन
उपायुक्त (से.नि.), वाण्ज्यिकर विभाग, उ.प्र.
फोनः 09651562123
ई.मेलः snstandon54@gmail.com
सदस्य, पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ
सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
श्री अरुण कुमार
महाप्रबन्धक (से.नि.), उत्तर प्रदेश जल विद्युत निगम लि.
फोन : 09839420999/09838203598
ई. मेल : arunksaxena1949@rediffmail.com
सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
श्री शिव नारायन अग्रवाल
पूर्व सी.एम.डी., उ.प्र. जल विद्युत उत्पादन निगम लि.
फोन :0522-2326000/09839022390/09415313364
ई.मेलः agarwalsn@rediffmail.com
सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
श्री हरीश चन्दर
मुख्य अभियन्ता (से.नि.),
उ.प्र. राज्य विद्युत परिषद
फोनः 0522-4011541/09696670165
संयोजक, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
श्री राजदेव स्वर्णकार
मुख्य प्रबंधक (से.नि.), सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इन्डिया
फोनः 0522-4045984/09450374814
ई.मेलः rajdeo.swarnkar@yahoo.in
सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
डॉ. अमित कुमार सिंह
फिजियोथेरेपिस्ट (परास्नातक)
फोनः 09565998001
ई.मेलः draksingh301280@yahoo.co
सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
श्री कपिल देव त्रिपाठी
भारतीय प्रशासनिक सेवा (से.नि.)
फोन : 0522-2395443/09935045827
ई.मेलः kdt0811@gmail.com
सदस्य, वैकल्पिक चिकित्सा प्रकोष्ठ
डॉ.(कु) अंजली गुप्ता
मनोचिकित्सक, नूर मंजिल मनोचिकित्सा केन्द्र
फोनः 09935224997
ई.मेलः njl_omer@yahoo.co.in
संस्थापक सदस्य
श्री हरिवंश कुमार तिवारी
मुख्य अभियन्ता (से.नि.), लोक निर्माण विभाग, उ.प्र.
फोनः 07259938899
ई. मेलः harivanshsavitri@gmail.com
सदस्य, डे सेन्टर प्रबंधन प्रकोष्ठ
श्री ललित कुमार
जे.एम.टी., लेसा
फोनः 09455836176
सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
श्री सुशील कुमार
आई.ए.एस. (से.नि.), पूर्व मंडलायुक्त, बस्ती
फोनः 09415086130
ई.मेलः sushil.alka@gmail.com
सदस्य, विधि तथा RTI प्रकोष्ठ
श्री श्रीराम वाजपेयी
डिप्टी कमिश्नर (से.नि.), वाणिज्यकर विभाग, उ.प्र.
फोनः 0522-2399000/09415367088
ई.मेलः shriram_vajpayee@yahoo.com
संस्थापक सदस्य
श्री अशोक कुमार मिश्र
मुख्य अभियन्ता (से.नि.), भारतीय रेल सेवा
फोन : 0522-2782136/2782137
संस्थापक सदस्य
श्री कृष्ण देव कालिया
अधिशाषी अभियन्ता (से.नि.), उ.प्र. राज्य विद्युत परिषद
फोन : 0522-2309245/09956287868

भावना की शाखाएँ

अध्यक्ष, सोनभद्र शाखा
श्री देवी दयाल गुप्ता, व्यापारी
फोन : 05445-262392/094153233357
सचिव, सोनभद्र शाखा
डॉ. उदय नारायण सिंह,
होम्योपैथी चिकित्सक
फोन : 05445-262043/09936181902

कवर 2 का शेष

डॉ. जी.पार्थ प्रॉतिम, सचिव
फोन : 0522-6592459/09235878417
ई. मेलः drparthaprotimgain@yahoo.com
कामर्शियल टैक्स रिटायर्ड ऑफिसर्स एसोसिएशन, उ.प्र. (COMRON)

श्री मदन मोहन कटियार, कोषाध्यक्ष
फोन : 09412207784
ई. मेलः madanmkatiyar@yahoo.in
परमहंस योगानन्द सोसायटी फॉर स्पेशल अनफोल्डिंग एन्ड मोल्डिंग (PYSSUM)

डॉ. नवल चन्द्र पंत, अध्यक्ष एवं अधिशाषी निदेशक
फोन : 0522-6545944/09452062323
ई. मेलः pyssum@gmail.com
श्री तारीफ़ सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट

श्रीमती शिखा सिंह, महासचिव
फोन : 09990103691
रुद्राक्ष वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति बगहा

श्री अशोक कुमार सिंह, अध्यक्ष
फोन : 08874924774
सदस्य, विधि तथा **RTI** प्रकोष्ठ
वरिष्ठ नागरिक समिति (ग्रामीण) हरौनी

श्री राम स्वरूप यादव, सचिव
फोन : 09455508230
ई. मेलः yadav.ramswaroop@yahoo.com
विद्युत पेन्शनर्स परिषद उत्तर प्रदेश

श्री हरीश कुमार श्रीवास्तव, प्रमुख महासचिव
फोन : 0522-2636011
ई. मेलः vidyutpensioners_lko@rediffmail.com
वेटरन सहायता समिति

कैप्टेन (डॉ.) आर.वाई.एस. चौहान, उपाध्यक्ष
कार्यवाहक अध्यक्ष
फोन : 09935713181
ई. मेलः rcdhyanprem@yahoo.co.in
भारतीय वरि-ठ नागरिक समिति (ग्रामीण) भौली

श्री हरि नारायण शुक्ल, अध्यक्ष
फोन : 09415768055
पलाश ग्रामीण वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति

श्री विमलेश दत्त मिश्र, सचिव
फोन : 09412417108
सदस्य, भावना प्रसादम् सेवा प्रकोष्ठ
विजय श्री फ़ाउन्डेशन (प्रसादम् सेवा)

श्री विशाल सिंह, सचिव
फोन : 09935888887
ई. मेलः vishalvirat@gmail.com
एल.एस.जी.ई.डी./उ.प्र. जल निगम पेंशनर्स एसोसिएशन

श्री नवीन चन्द्र पाण्डेय, महासचिव
फोन : 0522-2352748/09450365052
ई. मेलः ncpandey32@rediffmail.com

प्रबंधकारिणी के निर्वाचित तथा मनोनीत सदस्य

अध्यक्ष
श्री विनोद कुमार शुक्ल
मुख्य महाप्रबन्धक (से.नि.), उ.प्र. पावर कॉर्पोरेशन लि.,
फोन : 0522-4016048/09335902137,
ई. मेल : vk_shukla@hotmail.com

उपाध्यक्ष
श्री तुंग नाथ कनौजिया
अधि.अभि. (से.नि.), उ.प्र. राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि.
फोन : 09936942923/08738948562
ई. मेल:kartikeya.investments@yahoo.co.in

महासचिव(प्रशासन), सदस्य, संसाधन प्रबंध प्रकोष्ठ
श्री जगत बिहारी अग्रवाल
वरिष्ठ अधिशासी अभियन्ता (से.नि.), उ.प्र. जल निगम,
फोन : 0522-3245636/09450111425
ई. मेल : jagatagarwal2@gmail.com

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री सुशील शंकर सक्सेना
अधीक्षण अभियन्ता (से.नि.), सिचांई विभाग, उ.प्र.
फोन : 0522-2350763/09415104198
ई.मेलः sushilshanker2003@yahoo.com

प्रमुख महासचिव
श्री राम लाल गुप्ता
उप कृषि निदेशक (से.नि.), उत्तर प्रदेश
फोन : 0522-2392341/09335231118
ई मेलः guptarlguptalko67@gmail.com

महासचिव(कार्यान्वयन),
श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह
जिला उद्यान अधिकारी (से.नि.), उद्यान विभाग, उ.प्र.
फोनः 09412417108
ई.मेलः yogendrapratap610@gmail.com

शेष पृष्ठ 39 पर

भावना परिवार की ओर से शत् शत् नमन

जन्मः 25.12.1924 अवसानः 16.8.2018

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर
जन्म दिवस : 23 सितम्बर

अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र (औरंगाबाद) लखनऊ - स्वतंत्रता दिवस की झलकियां